बैंक ज्योति

जनवरी-जून 2020

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर

छमाही पत्रिका

जयपुर नराकास
की 69वीं छमाही समीक्षा
बैठक के कुछ दृश्य

बैंक नराकास की छमाही पत्रिका

बैंक ज्योति

जनवरी-जून 2020

अध्यक्ष :
महेन्द्र सिंह महनोत
अध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर एवं
महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर अंचल

सदस्य सचिव :
प्रीति राउत
सदस्य सचिव, बैंक नराकास, जयपुर एवं
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर अंचल

संपादक :
डॉ सुधीर कुमार साहु
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

सहयोग :
संध्या चौधरी
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

अन्नु शर्मा
प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ महाराष्ट्र, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

ललित कुमार जांगिड़
प्रबंधक (राजभाषा)
केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

विमला मीना
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

संपर्क :
बैंक ऑफ बड़ौदा
अंचल कार्यालय, बड़ौदा भवन,
13, एयरपोर्ट प्लाजा, टोंक रोड, जयपुर
दूरभाष : 0141-2727130
ईमेल : banktolicjaipur@gmail.com
www.banktolicjaipur.com

इस अंक में

मुखपृष्ठ	
आंतरिक कवर : नराकास गतिविधियों की तस्वीरें	
सम्पादक मण्डल / इस अंक में	1
अध्यक्ष का संदेश	2
सदस्य सचिव की कलम से	3
सम्पादकीय	4
नराकास एवं सदस्य बैंकों की राजभाषायी गतिविधियाँ	5
कोरोना योद्धा बैंकर	12
सरफेसी अधिनियम, 2002 ... कार्रवाई की समय सीमाएँ	14
तनिक अपनी ओर देखिए	15
आपदा प्रबंधन	16
कोविड-19, भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव....	17
एक विवाह ऐसा भी	19
पराजित मानवता	20
एक नई शुरुआत : सफल जीवन के नियम	21
अपना-अपना नजरिया	23
मेरी उड़ान	24
लेह-लद्दाख : धरती पर स्वर्ग	25
अब तो घर वापस आ जाओ	27
नारी बिन युग कैसा / जीवन सफर है आगे बढ़ना	28
राजस्थान प्रांत के कुछ विशेष त्यौहार	29
पत्थर का मूल्य	31
पराया धन	32
रामचरित मानस में नवधा भक्ति	33
राजभाषा अनुपालन में सहायक भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की वेबसाइट	34
ज्ञान गंगा	35
कृषि बैंकिंग का बदलता स्वरूप	36
जिंदगी का ख़्वाब / आधी-अधूरी जिंदगी	37
उमा से साक्षात्कार : मेरा सफर	38
तस्नीम से साक्षात्कार : ऐसे ही लिखती रहूँगी	39
सदस्य बैंकों के संपर्क विवरण	40
आंतरिक कवर : नराकास गतिविधियों की तस्वीरें	
अंतिम आवरण पृष्ठ : नराकास जयपुर के सदस्य बैंक	

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से समिति का सहमत होना जरूरी नहीं है।

सुश्री प्रीति राउत, सदस्य सचिव, बैंक नराकास एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा प्रकाशित
एवं प्रिन्ट-औ-प्रिन्ट, जयपुर द्वारा मुद्रित (केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

अध्यक्ष महोदय का संदेश

नमस्कार,

एक बार पुन: हमारी समिति की पत्रिका ''बैंक ज्योति'' के माध्यम से आपसे संवाद करने का सुखद अनुभव हो रहा है। निरंतर प्रयासों के साथ समिति अपनी परिधि में बेहतर कार्य कर रही है। कोविड –19 महामारी काल के दौरान तमाम विकट परिस्थितियों के बीच समिति अपने कार्यों के प्रति कटिबद्ध होकर कार्यरत है। इसी क्रम में समिति के तत्वावधान में राजभाषा प्रभारियों की बैठक आयोजित कर तीन उपसमितियों का गठन किया गया। तीनों उप समितियों की बैठकें भी समयानुसार आयोजित की गईं।

विभिन्न सदस्य कार्यालयों द्वारा निरंतर ऑनलाइन माध्यम का प्रयोग कर सभी बैठकें एवं प्रतियोगिताएं समय पर आयोजित की जा रही हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में भी राजभाषा का परचम लहरा रहा है। इसके लिए मैं सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रभारियों को बधाई देता हूँ।

राजभाषा हिन्दी में काम करना न सिर्फ हमारा संवैधानिक दायित्व है, बल्कि हमारी जरूरत भी है। बैंकिंग सेवाओं को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने के लिए हिन्दी एक सरल एवं सुगम माध्यम है। इससे न केवल हम बैंकिंग व्यवसाय की वृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं, बल्कि जन भाषा के प्रयोग से देश के विकास में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। **स्वामी दयानंद सरस्वती के कथन – 'हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है'** को उद्धृत करते हुए मैं यह उल्लेख करना चाहूँगा कि हिन्दी समृद्ध, परिभाषित एवं सरल भाषा है, जिसने अन्य भाषाओं के शब्दों को अंगीकार करते हुए व्यापक एवं गहन रूप धारण किया है। इसमें सभी भाषा– भाषायी लोगों को एक सूत्र में बांधने की पूर्ण शक्ति है।

पत्रिका के इस अंक में सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों, स्टाफ सदस्यों की रचनाओं/ आलेखों आदि को शामिल किया गया है। यह एक ऐसा मंच है जहां हम अपनी लेखनी के माध्यम से अपने भावों को सार्थक रूप से सभी के समक्ष रख पाते हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका,

(महेंद्र सिंह महनोत)
महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष
बैंक नराकास, जयपुर

सदस्य सचिव की कलम से...

नमस्कार,

सर्वप्रथम समिति के सदस्य सचिव के रूप में मैं हमारे अध्यक्ष महोदय, सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख, राजभाषा परिवार के सभी साथियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके अमूल्य मार्गदर्शन, सक्रिय सहयोग एवं सहभागिता से हमारी समिति बेहतर से बेहतरीन की यात्रा की ओर निरंतर अग्रसर है।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने या यों कहे कि लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हमारी दृढ़ इच्छा शक्ति की अहम भूमिका होती है। जीवन में कोई भी सफलता अर्जित करने के लिए सर्वप्रथम हमें अपने लक्ष्य को निर्धारित करना होता है, तत्पश्चात उसके प्रति एकाग्र होना होता है और तभी हमें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु हमारी समिति कटिबद्ध है। जब किसी मंच से हिन्दी के वैश्विक विस्तार का संकल्प लिया जाता है, तब अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दी विषयक गतिविधियों में अभिवृद्धि का संदेश स्वत: निहित होता है। भाषा और संस्कृति के अखंड संबंध पर हमेशा विशेष बल दिया गया है। यह प्रकृति और परिस्थिति दोनों रूपों में सामाजिक संस्कृति की संवाहिका रही है। वैश्विक एकता तभी सुदृढ़ होगी जब संस्कृति की धारा निरंतर बहती रहेगी। हिन्दी साहित्य जगत के सुविख्यात कवि **मैथिलीशरण गुप्त** जी के कथन के साथ मैं अपने शब्दों को विराम देती हूँ :–

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है,

जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

सादर,

(प्रीति राउत)
सदस्य सचिव
बैंक नराकास, जयपुर

संपादकीय

साथियो,

बैंक ज्योति का नया अंक आपको समर्पित करते हुए प्रसन्नता हो रही है। बैंक नराकास, जयपुर के सदस्य बैंकों की यह पत्रिका आप सभी के सहयोग से अपने निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में अग्रसर है। पत्रिका के उद्देश्यों में नराकास एवं सदस्य बैंकों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों की जानकारी देना प्रमुख है। साथ ही, सदस्य बैंकों के कार्मिकों की रचनात्मकता को हिंदी भाषा के माध्यम से प्रोत्साहित करना और हिंदी में स्तरीय बैंकिंग एवं तकनीकी साहित्य के सृजन को बढ़ावा देने के लिए ऐसी संस्थागत पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है।

रचनात्मकता प्रत्येक मनुष्य में होती है। लेकिन हर मनुष्य रचनाकार नहीं बन पाता। जिस मनुष्य को अनुकूल परिस्थितियाँ एवं वातावरण प्राप्त होता है, वह अपनी प्रतिभा को प्रकट करके दूसरों को चमत्कृत करता है और अपने विचारों से दूसरों को भी विचारशील बनने के लिए प्रेरित करता है। ठीक उसी तरह, जैसे मिट्टी, जल और प्रकाश पाकर कोई बीज अंकुरित, पल्लवित एवं पुष्पित होता है और उपवन को अपनी सुगंध से सुवासित करता है।

भाषा विचारों को प्रकट करने का माध्यम होती है। मनुष्य जीवन का अर्थ विचारशील होना और अपने विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करना ही है। बैंकर होने के नाते हमारे विचारों का बैंकिंग संबंधी विषयों पर केन्द्रित होना स्वाभाविक ही है। जब हम अपने विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करने के लिए प्रवृत्त होते हैं, तो अपने विचारों को एक बार फिर स्वयं परखते हैं। अधिक गहनता से विचार करते हैं। बैंकिंग कार्यों की सफलताओं एवं असफलताओं पर चिंतन करते हैं। फिर हमें पिछली असफलताओं से बचने का कोई बेहतर मार्ग भी सूझ ही जाता है। यही कारण है कि अपने विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करने में सक्षम बैंकर अपने कार्यों को अधिक प्रवीणता से कर पाते हैं। ऐसे लोग स्वयं अपने कैरियर को अधिक ऊँचाई पर ले जाने में तो सफल होते ही हैं, दूसरों को प्रेरित भी कर पाते हैं कि वे भी अपने बैंकिंग कर्तव्यों को अधिक तार्किकता, योजनाबद्धता एवं उद्देश्यपरकता के साथ संपन्न करने की आदत विकसित करें।

आशा है कि यह पत्रिका अपने इन उद्देश्यों में सफल होगी, जिसका पता हमें आपकी लिखित प्रतिक्रियाओं से ही चल सकेगा। आपके विचारों एवं सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ सुधीर कुमार साहु)
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), यूको बैंक
अध्यक्ष, प्रकाशन उपसमिति, बैंक नराकास, जयपुर

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गतिविधियाँ

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 69वीं बैठक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, जयपुर के संयोजन में कार्यरत बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 69वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 30 जनवरी, 2020 को श्री महेंद्र एस. महनोत, अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, बैंक नराकास, जयपुर की अध्यक्षता में एवं श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक के विशेष मार्गदर्शन में आयोजित की गई। उक्त बैठक में विशेष रूप से नाबार्ड के महाप्रबंधक श्री ए के बत्रा, सिडबी के महाप्रबंधक श्री बलवीर सिंह, बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रधान कार्यालय से आए सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री पुनीत कुमार मिश्र एवं अन्य सभी सार्वजनिक बैंकों के कार्यालय प्रमुख एवं उनके राजभाषा प्रभारी उपस्थित रहे। उक्त बैठक में बैंक नराकास, जयपुर द्वारा वार्षिक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता 2019 के विजेता कार्यालयों को सम्मानित किया गया। अंत में श्री प्रदीप कुमार बाफना, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख, जयपुर क्षेत्र, बैंक ऑफ बड़ौदा ने उपस्थित सभी गणमान्यों का आभार ज्ञापन किया।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की ऑनलाइन बैठक

दिनांक 03 जून 2020 को बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में सभी सदस्य कार्यालयों के राजभाषा प्रभारियों की विशेष बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष श्री महेंद्र एस. महनोत, महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा ने की। समिति द्वारा वर्ष 2020 में अपनाई जाने वाली कार्यपद्धति एवं रूपरेखा पर विस्तृत चर्चा हुई। अध्यक्ष महोदय ने अपने बहुमूल्य सुझावों से सभी को अवगत कराते हुए आह्वान किया कि वर्तमान बैंकिंग परिस्थितियों में हमें अपनी भाषा के माध्यम से ही आगे बढ़ना है। हमें योद्धा की तरह कार्य करना है। उक्त बैठक में सभी 15 सदस्य कार्यालयों की सहभागिता रही।

भारतीय रिज़र्व बैंक की गतिविधियाँ

भारतीय रिज़र्व बैंक में विश्व हिंदी दिवस आयोजन

भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर के राजभाषा कक्ष द्वारा दिनांक 17 जनवरी 2020 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का महत्व' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान हेतु हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक, मुद्रक और प्रकाशक श्री मायामृग को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सुधीर घोंगे, उप महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर द्वारा किया गया। श्री मायामृग ने अपने उद्बोधन में हिन्दी की यात्रा, राजभाषा और फिर विश्व भाषा बनाए तक की यात्रा और इस यात्रा के महत्वपूर्ण घटकों की चर्चा की। उन्होंने वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी के स्थान और आगामी समय में इसके बढ़ते महत्व पर विस्तार से चर्चा की। व्याख्यान के बाद खुली चर्चा में उन्होंने श्रोताओं की शंकाओं का निवारण किया। इस आयोजन में श्री सी डी श्रीनिवासन, बैंकिंग लोकपाल, श्री मनोज माथुर, उप महाप्रबन्धक, श्री अरविंद निगम, सहायक महाप्रबंधक, उमेश शर्मा, सहायक महाप्रबंधक सहित बैंक के अन्य अधिकारी एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

भारतीय रिज़र्व बैंक में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा का आयोजन

भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर के राजभाषा कक्ष द्वारा दिनांक 25 फरवरी 2020 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में 'प्रभावी सम्प्रेषण में मातृभाषा की भूमिका एवं महत्व' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान हेतु राजस्थान विश्वविद्यालय की व्याख्याता डॉ रेणु व्यास को आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मुकेश कुमार, उप महाप्रबंधक (प्रभारी अधिकारी), भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री सी. डी. श्रीनिवासन, बैंकिंग लोकपाल भी उपस्थित रहे। उन्होंने मुख्य अतिथि का पुस्तक देकर स्वागत किया। प्रभारी अधिकारी ने कहा कि यह बात अनेक शोधों के माध्यम से प्रमाणित हो चुकी है कि जिन बच्चों को आरंभिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में मिलती है उनका बौद्धिक विकास अधिक बेहतर होता है। अत: 'प्रभावी सम्प्रेषण में मातृभाषा की भूमिका एवं महत्व' जैसा विषय और भी समीचीन हो जाता है। डॉ रेणु व्यास ने अपने उद्बोधन में मातृभाषा की भूमिका और महत्व को रेखांकित करते हुए आज के दौर में मातृभाषाओं की स्थिति पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने वैश्विक परिदृश्य में अनेक मातृभाषाओं एवं बोलियों के विलुप्त होने या विस्मृत होने पर भी अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि मातृभाषाओं एवं बोलियों का विलुप्त होना संस्कृतियों के विलुप्त होने जैसा है। इसे सँजोए रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि संप्रेषण के मूल में मातृभाषा का ही स्थान है।

नाबार्ड की राज्य स्तरीय हिंदी माध्यम संगोष्ठी

नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में दिनांक 22 जनवरी 2020 को आयोजित राज्य स्तरीय ऋण संगोष्ठी राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण रहीं क्योंकि न केवल संगोष्ठी हिन्दी में संचालित हुई बल्कि इसमें सभी प्रस्तुतियाँ भी हिन्दी में ही हुईं और सभी वक्ताओं ने अपने सम्बोधन भी हिन्दी में ही दिए। नाबार्ड राजस्थान क्षेका के हिन्दी में तैयार किए गए कई प्रकाशनों का भी विमोचन किया गया। माननीय मुख्यमंत्री द्वारा नाबार्ड के इन प्रयासों की बहुत प्रशंसा की गई। इस संगोष्ठी में मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार श्री डी बी गुप्ता, संबन्धित सभी विभागों के सचिवों के अतिरिक्त श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक, श्री महेंद्र सिंह महनोत, महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा एवं अध्यक्ष एसएलबीसी सहित सभी बैंकों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

माननीय मुख्य मंत्री श्री अशोक गहलोत का स्वागत करते हुए
श्री सुरेश चन्द, महाप्रबंधक, नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

स्टेट फोकस पेपर 2020-21 का विमोचन करते हुए
माननीय मुख्य मंत्री तथा अन्य गणमान्य जन

नाबार्ड में कार्यशाला

दिनांक 18 फरवरी 2020 को राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को हिन्दी में प्रस्तुति कौशल में सक्षम बनाने हेतु एक विशेष सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें कॉर्पोरेट ट्रेनर श्रीमती तंजुल सक्सेना ने हिंदी में प्रस्तुति कौशल का प्रशिक्षण दिया।

नाबार्ड की ऑनलाइन वर्ग पहेली प्रतियोगिता

दिनांक 14 मार्च 2020 को जिला विकास प्रबन्धकों के लिए ऑनलाइन वर्ग पहेली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 17 जिला विकास अधिकारियों ने राजस्थान राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित अपने आरसीओ से भाग लिया।

बैंक ऑफ बड़ौदा की गतिविधियाँ

अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 07.01.2020 को जयपुर क्षेत्र की मानसरोवर सेक्टर 6 शाखा में राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन करके शाखा प्रमुख एवं मुख्य प्रबन्धक श्री सुनील कुमार मेहता की उपस्थिति में स्टाफ सदस्यों को शाखा स्तर पर अपेक्षित राजभाषा कार्यान्वयन से अवगत कराया गया।

पारंगत पाठ्यक्रम हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 25.02.2020 को जयपुर क्षेत्र में पारंगत पाठ्यक्रम हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण देते हुए श्री राजेश कुमार मीना, हिन्दी प्राध्यापक, केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

दिनांक 04.03.2020 को जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्यों हेतु ''पसंद का नाम चुनकर बोलें प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उप महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख श्री योगेश अग्रवाल, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री प्रदीप कुमार बाफना, सहायक महाप्रबंधक एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुबोध डी इनामदार एवं सहायक महाप्रबंधक एवं एस एम ई प्रमुख श्री विवेक सिंघल ने प्रतिभागियों एवं स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया गया।

राजभाषा प्रेरकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 29 जून 2020 को शाखाओं में कार्यरत राजभाषा प्रेरकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन माइक्रोसॉफ्ट टीम्स एप के माध्यम से किया गया। श्री प्रदीप कुमार बाफना, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने हेतु निर्देशित किया और साथ ही राजभाषा प्रेरकों द्वारा शाखा में उनके कार्यदायित्वों के बारे में बताया। क्षेत्रीय कार्यालय की राजभाषा अधिकारी द्वारा उपस्थित राजभाषा प्रेरकों को हिंदी टाइपिंग, गूगल वाइस टाइपिंग, कार्यालयीन पत्राचार का स्वरूप, राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी नियम व अधिनियम, तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन प्रस्तुत करने संबंधी जानकारी, यूनिकोड एवं गूगल वॉइस इन्स्टालेशन, पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग से अवगत करवाया गया। सुश्री नीतू चौधरी, वरिष्ठ प्रबन्धक (सूचना प्रौद्योगिकी), क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर द्वारा टीम्स एप के प्रयोग के बारे में सत्र लिया गया। उप क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक श्री सुबोध डी इनामदार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन किया गया।

पीएनबी में हिंदी कार्यशाला तथा बैंकिंग एवं राजभाषा प्रतियोगिता

यूको बैंक की गतिविधियाँ

यूको बैंक की जी डी बिड़ला व्याख्यानमाला

बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में यूको बैंक द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय में 29 फरवरी 2020 को जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया, जिसमें अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ एस एस सोमरा ने ''भारत के आर्थिक विकास में राष्ट्रीयकृत बैंकों की भूमिका'' विषय पर व्याख्यान** दिया। इस अवसर पर उन्हें जी डी बिड़ला सम्मान से सम्मानित किया गया। यूको बैंक के संस्थापक अध्यक्ष श्री जी डी बिड़ला की स्मृति में प्रति वर्ष दिया जाने वाला यह सम्मान डॉ सोमरा को कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं अर्थशास्त्र विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो सी एस बारला तथा यूको बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर के सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख श्री पी सी बंसल ने प्रदान किया। डॉ सोमरा ने अपने व्याख्यान में भारत के आर्थिक विकास में राष्ट्रीयकृत बैंकों की भूमिका को विस्तार से रेखांकित करते हुए निष्कर्ष के रूप में कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का निजीकरण उचित समाधान नहीं है। इस कार्यक्रम में जयपुर के सभी बैंकों के प्रतिनिधि तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के हिंदी एवं अर्थशास्त्र विभाग के व्याख्याता उपस्थित थे। साथ ही, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं राजकीय महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित थे। प्रो सी एस बारला ने अध्यक्षीय उद्बोधन में इस तरह के उद्देश्यपूर्ण आयोजन के लिए यूको बैंक की सराहना की। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन यूको बैंक के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) डॉ सुधीर कुमार साहु ने किया। अतिथियों का स्वागत श्री पी सी बंसल ने तथा आभार ज्ञापन बैंक के मुख्य प्रबंधक (आरएलएच) श्री गगन गुप्ता ने किया।

राजस्थान विश्वविद्यालय की राधा एवं विभा को यूको राजभाषा सम्मान

राजस्थान विश्वविद्यालय की एम.ए. हिंदी की 2018-19 परीक्षा की योग्यता सूची में प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर रहीं सुश्री राधा एवं सुश्री विभा पारीक को ''यूको राजभाषा सम्मान'' से सम्मानित किया गया।

यूको बैंक की विश्वविद्यालय स्तरीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता

''दुनिया की सर्वश्रेष्ठ लिपि देवनागरी का भारत में भविष्य'' विषय पर यूको बैंक द्वारा आयोजित राजस्थान विश्वविद्यालय स्तर की हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। राजकीय महाविद्यालय, जयपुर के राजनीति विज्ञान विभाग के छात्र अनिकेत जैन एवं अंकित शर्मा को क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय तथा गौरव भारद्वाज को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुए। हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय की तृप्ति शर्मा को तृतीय तथा राघवेन्द्र विजय एवं जतिन जांगिड़ को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुए। अन्य प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

केनरा बैंक में परिचर्चा

दिनांक 06.03.2020 को अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर द्वारा संयुक्त रूप से ''बैंक के जमा उत्पादों को और अधिक आकर्षक बनाने के उपाय'' विषय पर हिन्दी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री ललित कुमार जांगिड़, प्रबंधक (राजभाषा) ने स्वागत संबोधन दिया। श्री ललित कुमार वर्मा, मण्डल प्रबंधक, क्षेत्रीय कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य बैंकरों के संवाद कौशल, अभिव्यक्ति कौशल एवं तार्किक क्षमता को विकसित करना है, ताकि उनके आत्मविश्वास और कार्य कुशलता में निरंतर सुधार हो सके।

दिनांक 27.05.2020 को अंचल कार्यालय, जयपुर में श्री जे एल जागेटिया, सहायक महाप्रबंधक की अध्यक्षता में ''परंपरागत बैंकिंग के विकल्प में उभरता डिजिटल बैंकिंग'' विषय पर हिन्दी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सहायक महाप्रबंधक श्री जे एस निगम एवं श्री हरकेश्वर प्रसाद तथा मण्डल प्रबंधक श्री अशोक कुमार शर्मा एवं श्री रवि जैन ने अपने विचार प्रकट किए। श्री स्वागत संबोधन श्री ललित कुमार जांगिड़, प्रबंधक (राजभाषा) ने तथा धन्यवाद ज्ञापन अशोक कुमार शर्मा, मण्डल प्रबंधक ने किया।

दिनांक 30.06.2020 को जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय – 2 परिसर में क्षेत्रीय प्रमुख श्री डी के सिन्हा की अध्यक्षता में ''परंपरागत बैंकिंग के विकल्प में उभरता डिजिटल बैंकिंग'' विषय पर हिंदी परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वागत सम्बोधन सुश्री रीनू मीना, प्रबंधक (राजभाषा) ने दिया।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र की गतिविधियाँ

पुलिस कमिश्नर कार्यालय में

और नगर निगम में

बैंक ऑफ महाराष्ट्र के जयपुर अंचल की ओर से मास्क, सेनेटाइजर आदि भेंट करते हुए तत्कालीन अंचल प्रबंधक श्री संजय प्रताप सिंह एवं उप अंचल प्रबंधक श्री संजीव वर्मा

मुख्य मंत्री कोविड-19 राहत कोष में 5 लाख की राशि भेंट करते हुए तत्कालीन अंचल प्रबंधक श्री संजय प्रताप सिंह एवं उप अंचल प्रबंधक श्री संजीव वर्मा

इलाहाबाद बैंक में हिंदी कार्यशाला

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आयोजन

कोरोना योद्धा बैंकर : लॉकडाउन में दूरस्थ इलाकों तक बैंकिंग सेवाओं की पहुँच

कोविड-19 इस महामारी से आज पृथ्वी का हर देश जूझ रहा है। सभी इसके दुष्प्रभाव को कम करने और इससे बचाव के लिए उपाय करने के लिए युद्धस्तर पर जुटे हुये हैं। विश्वव्यापी लॉक-डाउन, एक देश से दूसरे देश में आवाजाही पर रोक, एक ही देश के भीतर एक राज्य से दूसरे राज्य जाने पर प्रतिबंध, बाजार बंद, शिक्षा संस्थान, दफ्तर सार्वजनिक वाहनों पर पाबंदी, सब घरों के भीतर क़ैद-इन अप्रत्याशित परिस्थितियों के बीच अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती रहीं। शहरी और ग्रामीण इलाके – कोई भी इनसे अछूता नहीं रहा।

जहां रोज कमाकर खाने वाले प्रवासी श्रमिक बेरोजगार होकर अपने-अपने राज्य/गाँव वापस लौटने पर मजबूर हो गए। वहीं सुदूरवर्ती ग्रामीण इलाकों में रहने वाली आबादी विशेषकर कृषक समुदाय अलग प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा था। यद्यपि इस अवधि में केवल कृषि ही ऐसा व्यवसाय था जो बहुत हद तक बाधित नहीं हुआ परंतु बाज़ार और परिवहन बन्द होने से यह भी सामान्य गति से नहीं चल पाया। ग्रामीणों को अपनी रोज़मर्रा की जरूरतों के लिए नकदी की आवश्यकता होती रही किन्तु परिवहन और आवाजाही पर बन्दिशों के कारण बैंक या बाज़ार तक पहुँचना मुश्किल था। ऐसे में भारत के बैंकिंग क्षेत्र और बैंक कर्मियों ने निरंतर अपनी सेवाएँ उपलब्ध करवाते हुये इस संकट के कुछ हद तक समाधान में सहयोग किया। बैंकों द्वारा अब तक किए गए प्रयासों का प्रतिफल आपदा की इस घड़ी में मिला।

समाज के वंचित वर्गों तक बैंकों की पहुँच बनाने, उनके वित्तीय समावेशन, ग्रामीणों को आर्थिक रूप से स्वावलंबित बनाने की दिशा में कई प्रयास किए जाते रहे हैं। ऐसे इलाके जहां बैंकों की शाखाएँ नहीं है वहाँ तक बैंकिंग सेवाएँ मुहय्या करवाने के उद्देश्य से नाबार्ड द्वारा मोबाइल एटीएम वैन, पीओएस मशीनें खरीदने आदि के लिए बैंकों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती हैं। कोविड-19 के इस दौर में इनकी सहायता से बैंकों ने गाँव-गाँव जाकर ग्राहकों को उनके द्वार पर बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाईं।

राज्य पर्यन्त कार्य कर रहे छोटे छोटे एनजीओ और स्वयं सहायता समूहों ने भी समाज के प्रति अपना दायित्व निभाते हुए अपने सामर्थ्य के अनुसार महामारी के प्रकोप से प्रभावित इलाकों में आवश्यक सामान, बचाव की वस्तुएँ तथा आर्थिक सहायता तक उपलब्ध करवाई।

नाबार्ड से सहायता प्राप्त मोबाइल एटीएम वैन

ग्रामीण इलाकों में बैंकिंग संबंधी जागरूकता उत्पन्न करने के प्रयोजन से नाबार्ड के वित्तीय सहयोग से राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक तथा बड़ौदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ने 3-3 मोबाइल एटीएम वैन का क्रय किया जिनमें एटीएम मशीनें भी स्थापित की गईं। दोनों ही बैंकों ने इन मोबाइल वैनों द्वारा लॉकडाउन की अवधि के दौरान राजस्थान के विभिन्न गाँवों में बैंकिंग सेवाएँ मुहय्या करवाई गईं।

बाड़मेर जिला प्रशासन, नाबार्ड एवं राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक की अभिनव पहल के तहत कोरोना लॉक डाउन के दौरान मोबाइल एटीएम वैन के जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में नकदी की कमी की भरपाई ग्राहकों को उनके द्वार पर एटीएम सुविधा उपलब्ध करवा कर की गई। ग्रामीणों एवं महिला जन-धन खाताधारकों ने इस सुविधा का भरपूर उपयोग किया। बैंक तथा जिला प्रशासन ने वैन के उपयोग में सोशल डिस्टेन्सिंग और सेनीटाइजेशन का भी विशेष ध्यान रखा। इस बैंक ने पाली में भी बैंक शाखाओं में भीड़ कम करने के लिए बफर ज़ोन और कर्फ्यूग्रस्त इलाकों में मोबाइल वैन सेवा द्वारा नकदी निकासी सुविधा उपलब्ध करवाई।

एनजीओ और महिला स्वयं सहायता समूहों का योगदान

बैंकों के सहयोग से छोटे-छोटे उद्यम करने वाले एनजीओ और छोटी-छोटी बचत करने वाले महिला स्वयं सहायता समूहों ने भी आपदा की घड़ी में अपने सामर्थ्य से बढ़कर योगदान किए। पाली की समृद्धि सीएलएफ़ के महिला स्वयं सहायता समूहों की सदस्यों ने भी घर पर मास्क बनाकर गाँव और ढाणियों में जरूरतमंदों को मुफ्त मास्क बांटे। सम्पूर्ण लॉकडाउन की घोषणा के बाद ग्राम पंचायत चेचट जिला कोटा में सभी दुकानें बन्द हो गईं, बाजार सूने हो गए। सिर्फ पुलिस ही पुलिस नजर आ रही थी। सिर्फ मेडीकल स्टोर, अस्पताल और बैंक में ही लोग नजर आते थे। सब्जी बाजार का खुलने का समय भी 12 से 4 बजे तक ही सीमित रखा गया। इनमें और बैंकों आदि में जाने वाले लोगों में सोशल डिस्टेंसिंग के लिए पुलिस प्रशासन को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। मुंह पर मास्क लगाने, एक-दूसरे से दूरी बनाए रखने तथा बार-बार साबुन से हाथ धोने और सेनेटाइज़ करने के निर्देश दिए जा रहे थे। इस कार्य को करते हुए स्वास्थ्य विभाग और पुलिस विभाग के कर्मचारी दिनभर धूप में खड़े रह कर अपनी ड्यूटी दे रहे थे, पानी और चाय तक नसीब नहीं होती थी। लगभग 100 पुलिस कर्मचारी व पुलिस मित्र एव बैंक कर्मचारी, अध्यापक, स्वास्थ्य सेवा से जुड़े कर्मचारी आदि काम में लगे थे। यह देखते हुए समदर्शी ग्रामीण विकास संस्थान के सचिव द्वारा लॉकडाउन रहने तक इन लोगों के लिए दोपहर 12 से 1 बजे के बीच चाय-नाश्ता व शाम 5 से 6 बजे फिर चाय-बिस्कुट की व्यवस्था करके इन लोगों को कुछ राहत प्रदान की। इस कार्य में शरणागति किसान एग्रो प्रोड्यूसर कम्पनी लि. चेचट ने भी अपना पूरा योगदान दिया। बाजार में आने व बैंक में जाने वाले कई महिला-पुरुष मास्क लगाकर नहीं आ रहे थे। यह देख कर संस्थान द्वारा थाना अधिकारी को 100 मास्क और बीआरकेजीबी के बैंक मैनेजर को 100 मास्क नि:शुल्क भेंट किए गए। संस्थान द्वारा ग्राम फाणदा में किसानों को भी 150 मास्क दिए गए।

ऐसे ही एक महिला समूह- अलफिया महिला स्वयं सहायता समूह ने चंदा इकट्ठा कर 21 दिनों तक दिहाड़ी मजदूरों के भोजन की व्यवस्था की और 200 मास्क बनाकर बांटे।

एनजीओ मुस्कान संस्थान डूंगरपुर ने राजस्थान और गुजरात की सीमाओं को पैदल पार करने वाले प्रवासी मजदूरों की स्क्रीनिंग के लिए तैनात 20 डॉक्टरों की टीम के लिए भोजन की व्यवस्था की। इस संस्था ने मशीनों की सहायता से आटा गूँथने और रोटी बनाने की व्यवस्था की और प्रति घंटा 1000 चपाती बनाते हुए खुद ही वाहनों की व्यवस्था करके पूरी लॉकडाउन की अवधि में पैदल आ-जा रहे श्रमिकों तथा बस अड्डों पर 2000 पैकेट भोजन की प्रतिदिन आपूर्ति की।

नाबार्ड से जुड़े उदयपुर स्थित गायत्री सेवा संस्थान राजस्थान उदयपुर, राजसमंद तथा प्रतापगढ़ जिलों में लगभग 400 बच्चों के लिए शिक्षा केंद्र संचालित करती है। संस्था ने न सिर्फ नियमित तौर पर मास्क और खाने के पैकेटों का प्रवासी मजदूरों तथा जरूरतमन्द परिवारों में वितरण किया, बल्कि जिले में आपदा प्रबंधन के लिए अपनी टीम के सदस्यों तथा निदेशक मण्डल द्वारा संग्रहीत किए गए रु.51000/- का एक चेक भी जिलाधिकारी को सौंपा।

• संकलन : संध्या चौधरी एवं जयदेव साव, नाबार्ड

सरफेसी अधिनियम, 2002 के तहत कार्रवाई की प्रक्रिया में समय सीमाएँ

बैंकिंग क्षेत्र आज गहरे संकट के दौर से गुजर रहा है। यह संकट एनपीए के कारण आया है। इसलिए आजकल सभी बैंक ऋण वसूली पर अपना पूरा जोर लगा रहे हैं। इस कारण वसूली की प्रक्रिया में सरफेसी अधिनियम, 2002 की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। इस अधिनियम से बैंकों के ऋण वसूली के अधिकार में वृद्धि हुई है और अब बैंक एनपीए ऋण खातों के ऋणी / सहऋणी / जमानतदार से अपने ऋण की वसूली में अधिक सक्षम हो गए हैं। लेकिन इस अधिनियम के तहत अधिकार एवं लाभ प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि इसकी पूरी प्रक्रिया के हर चरण में निर्धारित विभिन्न समय-सीमाओं का कड़ाई से पालन किया जाए। इन समय-सीमाओं का विवरण इस प्रकार है :-

1. जब ऋण खाता भारतीय रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशों के अंतर्गत एनपीए हो जाता है तो शाखा प्रबंधक को 7 दिनों के भीतर ऋणी / सहऋणी / जमानतदार को वसूली नोटिस जारी कर देना चाहिए।

2. नोटिस में दी गई समयावधि समाप्त हो जाने के बाद प्राधिकृत अधिकारी द्वारा सरफेसी अधिनियम, 2002 की धारा 13 (2) के तहत ऋणी / सहऋणी / जमानतदार को 60 दिनों का मांग नोटिस का जारी करना चाहिए, बशर्ते –
   - खाते में चल या अचल संपत्ति मौजूद है,
   - बैंक को देय ऋण राशि रु. 1 लाख से अधिक है,
   - बैंक को देय ऋण राशि मूल ऋण राशि एवं ब्याज के 20% से अधिक है,
   - जमानत के रूप में बंधक रखी गई संपत्ति कृषि भूमि नहीं है,
   - ऋण कालातीत नहीं हुआ है।

3. 60 दिनों की अवधि को ऋणी / सहऋणी / जमानतदार को नोटिस प्राप्त हो जाने की तारीख से गिनना चाहिए। नोटिस की तामील न होने पर यानी ऋणी / सहऋणी / जमानतदार के उपलब्ध न होने पर या नोटिस लेने से उनके द्वारा इन्कार करने पर अथवा नोटिस की पावती न मिल पाने पर ऋणी / सहऋणी / जमानतदार या उनके प्रतिनिधि के घर/भवन/दुकान/दफ्तर के प्रमुख हिस्से पर नोटिस की प्रति चस्पा कर देनी चाहिए जहां वह आम तौर पर रहते हैं या व्यवसाय करते हैं या व्यक्तिगत रूप से कार्य करते हैं। साथ ही, नोटिस को दो प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित करना चाहिए, जिनमें से एक समाचार पत्र स्थानीय भाषा में हो जिसका उस क्षेत्र में पर्याप्त प्रसार हो।

4. यदि प्राधिकृत अधिकारी को सरफेसी नोटिस के विरुद्ध ऋणी / सहऋणी / जमानतदार से कोई आवेदन / आपत्ति प्राप्त होती है, तो 15 दिनों के भीतर उसका जबाब देना अनिवार्य है।

5. ऋणी / सहऋणी / जमानतदार को सरफेसी नोटिस की तामील / प्राप्ति होने के या पावती मिलने के 60 दिनों के भीतर खाते में वसूली नोटिस में बताई गई राशि जमा न होने पर प्राधिकृत अधिकारी को जमानत के तौर पर रखी गई संपत्ति का कब्जा लेने की कार्रवाई प्रारम्भ कर देनी चाहिए। इसके लिए प्राधिकृत अधिकारी को ऋणी / सहऋणी / जमानतदार द्वारा जमानत के तौर पर रखी गई संपत्ति, जिसका कब्जा लेना है, के प्रमुख हिस्से पर कब्जा नोटिस (सरफेसी अधिनियम, 2002 की धारा 13(4) के तहत) की प्रति चस्पा कर देनी चाहिए। साथ ही, इस नोटिस को दो प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित करना चाहिए, जिनमें से एक समाचार पत्र स्थानीय भाषा में हो जिसका उस क्षेत्र में पर्याप्त प्रसार हो।

6. जमानत रखी गई संपत्ति का कब्जा प्राप्त करने के बाद प्राधिकृत अधिकारी को सूचीबद्ध मूल्यांनकर्ताओं से उसके अनुमानित मूल्य का पता लगाकर नियमानुसार उसका सुरक्षित मूल्य तय करना होता है। इसके बाद प्राधिकृत अधिकारी को संपत्ति बेचने के लिए पहली बार 30 दिनों का विक्रय नोटिस दो प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित करना चाहिए, जिनमें से एक समाचार पत्र स्थानीय भाषा में हो जिसका उस क्षेत्र में पर्याप्त प्रसार हो।

7. प्राधिकृत अधिकारी विक्रय नोटिस की प्रति ऋणी / सहऋणी / जमानतदार को विक्रय की तारीख से 30 दिन पहले तामील कराना / पहुंचाना भी सुनिश्चित करेगा। यदि विक्रय की तारीख से पहले ऋणी / सहऋणी / जमानतदार बैंक को देय राशि सभी लागतों / खर्चों / शुल्कों सहित बैंक में जमा करवा देता है तो प्राधिकृत अधिकारी उस संपत्ति का मालिकाना हक विक्रय / सुपुर्दगी / पट्टा के द्वारा किसी और को स्थानांतरित नहीं करेगा।

यदि उपर्युक्त समय-सीमाओं का ठीक से पालन नहीं किया जाए तो संपत्ति बेचकर बकाया ऋण चुकता करने का बैंक का अधिकार प्रभावित हो सकता है और ऋणी / सहऋणी / जमानतदार द्वारा न्यायालय में आपत्ति दर्ज करने पर बैंक को वसूली से वंचित रखा जा सकता है। इसलिए जरूरी है कि हम इन सभी समय-सीमाओं का कड़ाई से पालन करते हुए पूरी प्रक्रिया संपन्न करें ताकि हमारे बैंक का हित सुरक्षित रहे।

धर्मवीर सिंह शेखावत
मुख्य प्रबंधक (विधि)
यूको बैंक
अंचल कार्यालय
जयपुर

तनिक अपनी ओर देखिए

दोषों को खोजना, दुर्गुणों को देखना, उनका निरोध करना अच्छा काम है, लेकिन तब, जब यह काम अपने से शुरू किया जाय। प्राय: हर किसी के जीवन में लुका-छिपी का खेल चलता रहता है। जो दिखाई-सुनाई पड़ता है, वह होता नहीं है और जो वास्तविकता होती है उसे सुन-समझ पाना बहुत मुश्किल है। यह सर्वमान्य तथ्य हमारे जीवन में भी लागू होता है। जब हमारी वास्तविकता को दूसरे नहीं जान पाते, तब भला हम दूसरे लोगों की सचाई कैसे जान सकते है? इसलिए दोषों की निंदा और उनके उन्मूलन की कोशिश हमें खुद अपने-आप से शुरू करनी चाहिए।

ऐसी शुरुआत बड़ी हिम्मत का काम है। दूसरा कोई हमारी कमियाँ गिनाए, और वे सच्ची भी हों, तो भी हमारा अंहकार उसे मानने से इंकार करता है। लेकिन जब हम अपना आत्मविश्लेषण करते हैं तो अहम की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। उसे सचाई स्वीकार करनी पड़ती है। इसी स्वीकृति के बाद अनुभव होता है कि जिसे दुर्गुणों से छुड़ाने और पापों से बचाने की आवश्यकता है, वह प्रथम व्यक्ति और कोई नहीं हम ही हैं। अपनी कुरूपता स्वीकार करने में जिसे डर नहीं और जिसमें उसके निवारण की हिम्मत है, वह किसी बड़े शूरवीर से कम नहीं।

सच तो यह है कि हम बाहर से अपने को कितना ही बहादुर क्यों न मानें, पर शायद मन के भीतर हमको अपने से बड़ा कायर कोई मिले। इसी कायरता के कारण अपने दोषों को छुपाने में अपना सारा मनोबल लगा देते हैं। इसका आधा मनोबल भी यदि इनके निवारण में लगाएँ तो बड़ी सरलतापूर्वक निर्मल और निष्पाप हो जाएँ। इसके चलते वे सारे आवरण हट जायेंगे जो हमारे अंदर की असंख्य सोई पड़ी गुप्त शक्तियों के जागरण में बाधक हैं। महापुरुषों का जीवन इस बात का साक्षी है कि उन्होंने अपनी बुराइयों को देखना और उनका निवारण करना सीखा है। यदि हमें भी महानता की चाह है तो रास्ता वही है जिस पर महापुरुष चलते हैं, अर्थात उनकी तरह अपनी बुराइयों को देखना और उनका निवारण करना सीखना है।

आमतौर पर होता यह है कि हमें चापलूसी पसंद है और दोषों की चर्चा करने वाला हमें शत्रु लगता है। इसे अपनी कायरता ही कहनी चाहिए कि वस्तुस्थिति बताने वाले दर्पण में अपनी कुरूपता हम देख नहीं सकते और उस दर्पण को तोड़ने के लिये तैयार रहते हैं।

अपनी दुर्बलता के इसी बचाव के कारण हम और हमारा व्यक्तित्व सारी जिंदगी अविकसित ही बने रहते हैं। न जाने कौन सी दुष्प्रवृति हमारी प्रतिभा को पल्लवित होने से रोकती है। हमें उन अवरोधों को जानने व हटाने की आवश्यकता है, जो हमारे अंदर दोषों-दुर्गुणों के रूप में पल रहे हैं।

अच्छा यही है कि समीक्षा के लिये आज और अभी आगे बढ़ चलें। ताकि अपने व्यक्तित्व के विकास में रुकावट डालने वाले अवरोधों को हटा सकें। बुराइयों के अंत के लिये ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। इसमें सबसे पहला और प्रतिभाशाली कदम यह हो सकता है कि अपने दोषों को साहसपूर्वक स्वीकार करें।

दोषों को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है, परंतु हमें अपनी बुराइयों को स्वयं अपने सामने मानने में, आत्मीय गुरुजनों के समक्ष स्वीकार करने में और परमेश्वर के समक्ष कहने पर जरा सी भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये। यदि हम ऐसा कर सके तो हमारी आत्मा की आवाज से, गुरुजनों के आशीष से और भगवान के अनुग्रह से हमारे अंदर अपूर्व साहस जन्म लेगा जिसके बलबूते पर हम अपने सारे दोषों और दुर्गुणों को उखाड़ फेंकने में समर्थ हो जायेंगे। आपने आप से लड़ना और स्वयं को शुद्ध बना लेना ही सबसे बड़ी योग्यता और वीरता की निशानी है। महापुरुषों ने दूसरों पर दोषारोपण करने के स्थान पर सतत आत्मनिरीक्षण किया। तभी तो सदियों से वो लोग हमारे और आने वाली पीढ़ियों के लिये आदर्श स्थापित कर पाए हैं। अच्छा यही है कि हम अपनी कमियों को खोजें औए उन्हें दूर करने का प्रयास करें। यही अपनी शक्तियों को पहचानने और उन्हें विकसित करने का राजमार्ग है। ऐसा करके हम अपने देश और अपनी भावी पीढ़ियों के लिये उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

श्रीमती सरस्वती
प्रबंधक
भारतीय रिजर्व बैंक
जयपुर

आपदा प्रबंधन

हम सभी इस शब्द से अच्छी तरह से परिचित हैं। भारत में हर साल कई चक्रवात उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों से टकराते हैं। यदि हम 8-10 साल पहले की बात करें, तो ये चक्रवात गंभीर रूप से जीवन को क्षति पहुंचाते थे। लेकिन विगत 4-5 वर्षों में जीवन क्षति लगभग शून्य हो गई है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अभी तक प्राकृतिक आपदा को नियंत्रित कर पाना मनुष्य के वश की बात नहीं है। लेकिन अगर पहले से इनका पता लगा लिया जाए तो हम वैज्ञानिक तकनीकों को लागू करके आपदा के प्रभाव को कम जरूर कर सकते हैं।

1990 में, कृषि मंत्रालय के अंतर्गत आपदा प्रबंधन कक्ष का गठन किया गया था, लेकिन लातूर (महाराष्ट्र) भूकंप, उड़ीसा सुपर साइक्लोन और गुजरात भूकंप के समय इन आपदाओं को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ख़तरा समझा गया और जे.सी पंत समिति के सुझावों के बाद आपदा प्रबंधन को गृह मंत्रालय के अंतर्गत लाया गया। वर्ष 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम (एनडीएमए) पारित किया गया, जिसके बाद आपदा प्रबंधन का नेतृत्व सीधे प्रधानमंत्री द्वारा स्वयं सम्हाला जाता है।

कुछ केस स्टडी और रोचक तथ्य :

1. गो बैग : गुजरात भूकंप के बाद गो बैग का सुझाव सामने आया। किसी भी आपदा के बाद सबसे जरूरी है पुनर्वास और पुनर्वास के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि पीड़ित के पास बीमा कागजात, बैंक खाता विवरण, चिकित्सा बीमा विवरण जैसे आवश्यक दस्तावेज मौजूद हों। आधुनिक डिजिटल युग में ये चीजें ऑनलाइन उपलब्ध हैं, लेकिन ग्रामीण भारत में लोग अभी भी भौतिक दस्तावेजों पर भरोसा करते हैं। इसके लिए गो बैग की अवधारणा को लाया गया था। इसके तहत आपदा प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को प्रशिक्षित किया जाता है कि वे इन सभी आवश्यक दस्तावेजों को हर समय एक बैग में निर्गम द्वार के पास रखें। जब भी भूकंप आए तो सभी लोग अपने उस बैग को लेकर ही बाहर की ओर भागें।

2. पगली (PAGALI) : इसका अर्थ है कि जब भी हम घर छोड़ें, पानी **(PANI)**, गैस **(GAS)** और लाइट **(LIGHT)** जरूर बंद कर दें।

3. सभी आपदाओं में एक बात आम है। हताहत और मृतों में अधिकतम संख्या वरिष्ठ नागरिक और महिलाओं की होती है। क्या कोई अनुमान लगा सकता है कि ये लोग आपदा में क्यों फँसते हैं? ज्यादातर समय पुरुष और बच्चे घर पर नहीं होते हैं और ये दोनों घर में सबसे कम समय बिताते हैं। यह भी एक तथ्य है कि हमारे घरों की संरचना भूकंप प्रतिरोधी नहीं होती है। लेकिन हमारे कार्यालय, स्कूल और कॉलेज हमारे घरों से कहीं अधिक टिकाऊ होते हैं।

4. भारत जैसी बढ़ती अर्थव्यवस्था में, तथ्य यह साबित करते हैं कि आर्थिक विकास सीधे आपदाओं से प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल जैसे राज्य गुजरात, महाराष्ट्र, केरल जैसे अन्य राज्यों के विकास की गति के हिसाब से बहुत पिछड़े हुए हैं। इसका कारण यह है कि हर साल इन राज्यों में बाढ़ या चक्रवात आते हैं और छत्तीसगढ़ और झारखंड तक अपना प्रभाव छोड़ते हैं। इन दुर्घटनाओं के कारण यहाँ औद्योगिक निवेश बहुत कम हैं।

5. आर्थिक मंदी के लिए प्राकृतिक आपदाओं को दोष देना सही नहीं है क्योंकि जापान, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देश भी हैं, जहां प्राकृतिक आपदाएँ अक्सर आती हैं। लेकिन इन देशों की आपदा से मुकाबला करने की क्षमता बहुत अधिक है या हम कह सकते हैं कि आपदा के प्रति समाज का रुख, प्रतिरोधात्मक क्षमता और लचीलापन उन्हें इन आपदाओं से आसानी से लड़ने के लिए सक्षम बनाता है।

निम्नांकित उपायों से हम आपदाओं को नियंत्रित कर सकते हैं :

1) आपदा को खत्म करें : यह मानव निर्मित आपदाओं पर लागू है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाएं हमारे नियंत्रण में नहीं हैं।

2) आपदाओं के प्रभाव को कम करें : भूकंप प्रतिरोधी संरचना का निर्माण करके भूकंप के तथा अग्निरोधी पेंट को अपनाकर आग लगने की घटनाओं के प्रभावों को कम किया जा सकता है।

3) क्षेत्र का शोधन करें : दुर्घटना संभावित क्षेत्रों पर ध्यान देकर रसोई या धमन भट्ठियों के पास दहनशील सामग्री न रखना, CBRN फायर प्रूफ चेंबरों का निर्माण करना, विस्फोटक संरक्षित संरचना बनाना, आपातकालीन निकास द्वार रखना आदि उपायों से दुर्घटनाओं से बचाव करना संभव है।

4) जोखिम को नियंत्रित करें : दुर्घटनाओं अथवा आपदाओं की तुरंत सूचना देने के लिए सायरन, अलार्म, लाउडस्पीकर जैसी व्यवस्था करके और समय-समय पर उसकी जाँच करके तथा लोगों को इनके प्रयोग का अभ्यास कराकर जोखिम को नियंत्रित कर सकते हैं।

5) व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण : बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में घर-घर में ट्यूब, छोटी नावें रखने से जनहानि कम होती है।

6) अनुशासन : नियम बनाने, जानकारी देने, जागरूकता बढ़ाने और बचाव के लिए जरूरी उपाय करने के अलावा यह भी जरूरी है कि लोग स्वत: अनुशासित होकर इस प्रणाली का उपयोग करें और अपने सहित दूसरों का बचाव करें।

आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में ताजा संस्थागत प्रयास और तकनीकी विकास :

1. NDRF और SDRF के लिए बटालियन की स्थापना और रणनीतिक रूप से तत्काल प्रतिक्रिया के लिए उनको तैयार रखना। इसके लिए सशस्त्र बलों और अर्धसैनिक बलों के अधिकारियों को तैनात किया गया है।

2. अग्निशमन सेवा का विस्तार करके सभी राज्यों की अग्निशमन सेवाओं को सामान्य मानक संचालन प्रक्रिया के साथ एकीकृत करना।

3. आपदा प्रबंधन मंत्रालय की स्थापना

4. भारत में मेट्रो/राजधानी/बड़े शहरों में रेडियोलॉजिकल खतरों को संभालने के लिए मोबाइल रेडिएशन डिटेक्शन सिस्टम (MRDS) की तैनाती पर परियोजना

5. आगामी आपदा की सूचना प्रसारित करने के लिए एक कॉमन अलर्टिंग प्रोटोकॉल स्थापित करने का प्रस्ताव है। जैसे जापान में, भूकंप से पहले, सभी टीवी, वेबसाइट और मोबाइल एसएमएस पर भूकंप संबंधी अलर्ट। यह लगभग 2 मिनट की एक प्रक्रिया है।

6. चक्रवात और सुनामी के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली

7. राष्ट्रीय अग्नि रिकॉर्ड सेल, राष्ट्रीय अग्नि कल्याण कोष, राष्ट्रीय अग्नि तकनीकी सेल, राष्ट्रीय अग्नि अनुसंधान एवं विकास सेल, राष्ट्रीय अग्नि शिक्षा प्राधिकरण एवं राष्ट्रीय अग्नि नियंत्रण कक्ष जैसे कार्यकर्मों को स्टैंडिंग फायर एडवायजरी कमिटी में रखा जा चुका है और इस पर कार्रवाई जारी है।

बेहतर आपदा प्रबंधन के लिए सभी संस्थानों में व्यवसाय निरंतरता प्रबंधन टीम एवं क्षति आकलन टीम का गठन होना चाहिए। इन दलों को दिशानिर्देश देने से पहले उन्हें प्रशिक्षण देना जरूरी है। बैंकों को भी इससे अछूता नहीं रहना चाहिए। आपदा प्रभावित राज्यों में गठित ऐसे सभी दलों का पंजीकरण होना चाहिए ताकि आपदा के समय आपदा प्रबंधन बलों द्वारा इनके बीच समन्वय स्थापित किया जा सके। इससे आपदाओं से बेहतर ढंग से निपटा जा सकेगा। आईबीए द्वारा इस विषय में दिशानिर्देश जारी किए गए हैं जिसके अनुसार आने वाले दिनों में प्रत्येक बैंक में आपदा प्रबंधकों की नियुक्ति संभावित है।

सुमित भारद्वाज
प्रबंधक (अग्नि सुरक्षा)
पीएनबी
अंचल कार्यालय, जयपुर

कोविड–19 : भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव और बैंकों की भूमिका

भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश है। यहां प्रकृति जन्य भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधताएं पाई जाती हैं, जो भारत देश को अधिक सुंदर एवं समृद्ध बनती हैं। परंतु इन विविधताओं के मध्य हमें विषमताओं का एक ऐसा पक्ष भी प्राप्त होता है, जिसकी स्थिति भयावह एवं चिंताजनक है। यहां हम विषमताओं के आर्थिक पक्ष की चर्चा करेंगे। कोविड –19 ने सम्पूर्ण विश्व के आर्थिक पक्ष को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। बदलती कार्यस्थिति एवं बढ़ती निर्धनता ने इस स्थिति को और अधिक चिंताजनक बना दिया है। हाल ही में, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) ने ''ILO मॉनीटर: कोविड–19 एंड द वर्ल्ड ऑफ वर्क'' नामक रिपोर्ट का तृतीय संस्करण जारी किया है। ILO की यह रिपोर्ट कार्यस्थिति पर कोविड–19 के संभावित प्रभावों से संबन्धित चिंताओं का मूल्यांकन करती है तथा इन प्रभावों को समाप्त करने तथा सशक्त एवं तीव्र गति से इस स्थिति को सुविधाजनक बनाने के लिए नीतिगत विकल्पों को प्रस्तावित करती है।

ILO संयुक्त राष्ट्र की एक विशेषीकृत एजेंसी है। इसके भारत सहित 187 राष्ट्र सदस्य हैं। यह श्रम मानकों का निर्धारण करने, नीतियां विकसित करने और सभी महिलाओं और पुरुषों के लिए सम्मानित कार्य को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों को की योजना बनाने के लिए सरकार, नियोक्ताओं और श्रमिकों को एक मंच प्रदान करने वाली संयुक्त राष्ट्र की एकमात्र त्रिपक्षीय एजेंसी है।

कार्यस्थिति पर प्रभाव

''ILO मॉनीटर: कोविड–19 एंड द वर्ल्ड ऑफ वर्क'' रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में 81 प्रतिशत नियोक्ता और 66 प्रतिशत स्वयं श्रमिक उन देशों में निवास और कार्य करते हैं जहां कार्यस्थलों को बंद करने की अनुशंसा की गई है। वर्ष 2020 की प्रथम तिमाही में वैश्विक स्तर पर कार्य के घंटों में अनुमानित 4.5% (लगभग 130 मिलीयन पूर्णकालिक कार्य) की गिरावट हुई है। निम्न मध्यम आय वाले देशों में कार्य के घंटों की अधिकतम हानि होने की संभावना है। जिन क्षेत्रों के अत्यधिक प्रभावित होने की पहचान की गई है, उनमें आवास एवं खाद्य सेवाएं, विनिर्माण, थोक एवं खुदरा व्यापार, अचल संपत्ति और व्यवसायिक गतिविधियां शामिल हैं। ये क्षेत्र औसतन राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 30 प्रतिशत से अधिक एवं विश्वभर में लगभग 436 मिलियन उद्यम में योगदान प्रदान करते हैं। ऐसी स्थिति में इन क्षेत्रों के अत्यधिक रूप से प्रभावित होने के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहन प्रभाव पड़ा है और इसने निर्धनता दर को अधिक बढ़ावा दिया है । ILO की रिपोर्ट के अनुसार भारत के 400 मिलियन श्रमिकों के अधिक निर्धन हो जाने की संभावना है।

आय के स्रोतों में कमी

मांग में गिरावट एवं आगत की आपूर्ति में व्यवधान उत्पन्न होने से सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों की आर्थिक गतिविधियों (बिक्री, उत्पादन) में कमी के कारण स्वरोजगार करने वालों की आय में गिरावट हुई है। बचत एवं बीमा कवर जैसे पर्याप्त सुरक्षा उपायों के अभाव के कारण निर्धन नकारात्मक प्रभावों वाली उत्पादक परिसंपत्तियों की बिक्री जैसी गतिविधियों में शामिल होने के लिए बाध्य हो सकते हैं। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार भारत में बेरोजगारी दर में 3 मई को समाप्त होने वाले सप्ताह तक 27.11 प्रतिशत की वृद्धि हो चुकी थी।

संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय द्वारा जारी रिपोर्ट ''वैश्विक निर्धनता पर कोविड–19 के प्रभाव का आकलन'' के अनुसार भारत में अनुमानित 812 मिलियन निर्धन लोग निवास करते हैं। कोविड–19 के कारण यह संख्या बढ़कर 915 मिलियन हो सकती है।

भारतीय बैंकों की भूमिका

कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया के कार्यक्षेत्र को घर तक सीमित कर दिया है। भारत की व्यापक आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक भौगोलिकता, कम स्वास्थ्य जागरूकता, अपर्याप्त चिकित्सा–अनुसंधान, स्वास्थ्य बीमा प्रक्रिया एवं स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी संरचनाओं के अभाव के कारण भारत को इस महामारी से ज्यादा खतरा है। पिछले 3 महीनों में भारत ने कई ऐसे साहसिक निर्णय लिए हैं जिन्होंने एक बड़ी आबादी को इस महामारी की चपेट में आने से बचाया है। केंद्र और राज्य सरकारों ने समय रहते कई मजबूत निर्णय किए जिनमें प्रमुख रूप से लॉकडाउन रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था को संतुलित रखने के लिए और किसी बड़े आर्थिक संकट से बचाने के लिए भारतीय बैंकों द्वारा ये महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं :–

भारतीय रिजर्व बैंक ने अपने स्तर पर अपनी मौद्रिक नीति में कई बड़े नीतिगत बदलाव किए जिससे अर्थव्यवस्था में तरलता बनी रहे। इसके लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक में रेपो रेट को घटाकर 4.00 फीसदी और रिवर्स रेपो रेट को 3.35 फीसदी कर दिया है।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों को एनपीए के वर्गीकरण के लिए पहले 3 महीने और फिर 3 महीने की अतिरिक्त छूट दी गई है। नाबार्ड, सिडबी और नेशनल

हाउसिंग बैंक के जरिए 50,000 करोड़ रुपये के पुर्नवित्तीयन की व्यवस्था भी की गई है तथा केंद्र सरकार की वित्तीय जरूरतों को समझते हुए अस्थाई रूप से डब्लूएमए के जरिए दिए जाने वाले कर्ज की सीमा को 1.2 लाख करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया है।

बैंकों के कर्मचारियों ने इस महामारी के समय कार्यालय में न्यूनतम 33% से लेकर 100% तक उपस्थित होकर पूर्ण तालाबंदी के काल में ग्राहकों को दैनिक सेवा प्रदान की तथा केंद्र सरकार के द्वारा घोषित कमजोर वर्ग के लोगों को राहत देने के लिए 1.70 लाख करोड़ रुपये की 'पीएम गरीब कल्याण योजना' का निष्पादन किया जिसके अंतर्गत बैंक कर्मचारियों ने स्वास्थ्य संबंधी जोखिम उठाते हुए कमजोर वर्ग के करोड़ों लोगों को नकद रुपये बांटकर राहत प्रदान की।

इस महामारी के प्रभाव में आने वाले लाखों छोटे व्यवसायों को राहत देने के लिए, वित्त मंत्रालय द्वारा तरलता उपायों की घोषणा की गई, जिसमें 3 लाख करोड़ रुपये के संपार्श्विक-मुक्त स्वचालित ऋण शामिल हैं जिसे बैंक ईसीएलएस के माध्यम से ग्राहकों को प्रदान कर रहे हैं जिसके माध्यम से इकाइयां अपना रोजगार पुनः चालू कर रहे हैं। इस योजना से 45 लाख इकाइयों को लाभ होने की उम्मीद है।

सभी वर्ग के ग्राहकों के लिए 1 मार्च 2020 से 31 अगस्त 2020 के बीच वाले सभी सावधि ऋण (कृषि अवधि ऋण, खुदरा और फसल ऋण सहित) के किस्तों को आगे बढ़ाया गया है तथा ओवरड्राफ्ट या सीसी के रूप में स्वीकृत कार्यशील पूंजी सुविधाओं के संबंध में भी इस अवधि के दौरान लागू ब्याज की वसूली को स्थगित किया गया है।

बैंकों द्वारा गैर-नकद डिजिटल भुगतान विकल्प (जैसे NEFT, IMPS, UPI और BBPS) फंड ट्रांसफर, सामानों / सेवाओं की खरीद, बिलों के भुगतान आदि की सुविधा के लिए चौबीसों घंटे उपलब्ध हैं। सामाजिक संपर्क से बचने और सार्वजनिक स्थानों पर जाने से कोरोना वायरस महामारी के विस्तार को सीमित करने के लिए मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम कार्ड आदि की मदद से भुगतान के डिजिटल माध्यमों को बढ़ावा दिया गया है।

क्रेडिट कार्ड वाले ग्राहकों को भी चुकौती से छूट की अवधि की सुविधा दी गई है। व्यवसाय जगत के लिए कार्यशील पूंजी महत्वपूर्ण होती है जिसकी गणना करने के लिए मार्जिन को कम करने से भी ग्राहक की आहरण शक्ति बढ़ेगी।

किसान अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है और इस महामारी में किसान अपनी अल्पकालिक फ़सली ऋण (केसीसी) के देय राशि का भुगतान करने में सक्षम नहीं हैं। इसीलिए यह सुनिश्चित करने के लिए कि किसानों को दंडात्मक ब्याज नहीं लगे और ब्याज छूट योजना का लाभ भी जारी रहे, सरकार ने बैंकों के माध्यम से यह निर्णय लिया है कि पुन: भुगतान की विस्तारित अवधि में किसानों को ब्याज में 2% छूट और समय पर भुगतान हेतु 3% छूट की प्रोत्साहन योजना जारी रहेगी।

इस महामारी काल में व्यापार में बढ़ते निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए और बैंकों के द्वारा इन एमएसएमई व्यवसायियों को ऋण उपलब्ध कराने के लिए एमएसएमई की परिभाषा में भी बदलाव किया गया है, जिसके अनुसार अब विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र में आने वाली सभी इकाइयां जिनमें निवेश – प्लांट एवं मशीनरी (विनिर्माण क्षेत्र) अथवा उपकरण (सेवा क्षेत्र) रु. 1 करोड़ एवं वार्षिक बिक्री 5 करोड़ से कम है उन्हें सूक्ष्म इकाई में परिभाषित किया जाएगा। अगर निवेश रु. 10 करोड़ से कम एवं वार्षिक बिक्री रु. 50 करोड़ से कम है, तो उन्हें लघु इकाई में परिभाषित किया जाएगा। इससे अधिक निवेश वाली सभी इकाइयों को जिनमें निवेश रु. 20 करोड़ से कम एवं वार्षिक बिक्री रु. 100 करोड़ से कम है, उन्हें मध्यम इकाई में परिभाषित किया जाएगा। उक्त वर्गीकरण से ना केवल इकाइयों में निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा बल्कि आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने में भी मदद मिलेगी।

बैंकों ने वित्तीय कर्तव्य के अलावा सामाजिक कर्तव्य भी निभाया है जैसे मास्क,सैनीटाइजर एवं राशन का वितरण करना। कई बैंकों ने कोरोना वाइरस को रोकने के लिए बनाने वाले उपकरण आदि के लिए संपार्श्विक-मुक्त ऋण उपलब्ध करवाए हैं जिससे कई क्षेत्रों में जरूरत के अनुसार मास्क, सैनीटाइजर की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकी।

निष्कर्षतः, भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए बैंकिंग क्षेत्र अपने सामाजिक दायित्व को समझते हुए आरंभ से ही भारत सरकार के दिशानिर्देशों का पालन कर रहा है। परंतु विविधतापूर्ण देश को आर्थिक विषमता से मुक्त करने के लिए उपर्युक्त योजनाओं का सावधानीपूर्वक निष्पादन अपेक्षित है।

संदर्भ स्रोत :

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा प्रकाशित ''ILO मॉनीटर: कोविड-19 एंड द वर्ल्ड ऑफ वर्क'' रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय द्वारा जारी रिपोर्ट ''वैश्विक निर्धनता पर कोविड-19 के प्रभाव का आकलन''

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी की नवीनतम रिपोर्ट

भारतीय रिजर्व बैंक वेबसाइट

अन्नु शर्मा
प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ महाराष्ट्र
अंचल कार्यालय
जयपुर

एक विवाह ऐसा भी

अप्रैल 2019 में मेरी पुत्री का रिश्ता दिल्ली के एक परिवार में तय हुआ था। मेरे तथा वर-पक्ष के परिवार वाले सभी बहुत खुश थे। हमारे खानदान में एक ही पुत्री है, अतः सभी धूमधाम से भाग लेकर विवाह में सम्मिलित होना चाहते थे। विवाह की तारीख 16 अप्रैल 2020 को जयपुर में तय हुई। हम सब के पास तैयारियां करने के लिए पूरा एक वर्ष था। ज्यों-ज्यों समय नजदीक आने लगा, तैयारियां बढ़ती गईं। सभी जगह बुकिंग हो गयी, कार्ड छप गए।

मेरी पुत्र-वधू फरवरी माह 2020 में ही मेरे पौत्र के साथ विदेश से शादी में सम्मिलित होने के लिए जयपुर पहुँच चुकी थी। 21 मार्च 2020 को मेरा पुत्र भी विदेश से दिल्ली तक पहुँच गया। चूंकि मेरे पुत्री दिल्ली में ही कार्यरत थी, हमने तय किया कि 22 मार्च को हम दिल्ली जाकर उन दोनों को जयपुर ले आएंगे। परंतु 22 मार्च को पूरे भारत देश में जनता कर्फ्यू लागू हो गया। अब हमने सोचा कि हम 23 मार्च को अपना यह कार्य पूर्ण कर लेंगे। परंतु हम दिल्ली जा न सके, क्योंकि टीवी व समाचार-पत्रों में एक ही खबर छाई हुई थी- कोरोना वाइरस !

सारा विश्व इस महामारी की चपेट में आ गया। हर तरफ से मरीजों और मृतकों की खबरें आने लगीं। जैसे हवा में एक जहर ही फैल गया हो। देश-विदेश में लॉकडाउन तथा सोशल डिस्टेन्सिंग का नियम लागू कर दिया गया। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें बंद हो गईं। आवागमन के सभी साधन व यातायात व्यवस्था बाधित हो गई। मानव-जाति अपने-अपने घरों में कैद हो गई और जीवन मानों थम सा गया। दफ्तर, बाजार, सड़कें, गालियां सूनी हो गईं। जीवन सामान्य से असामान्य हो गया। सभी तरह के धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों पर रोक लग गई और 24 मार्च, 2020 से 14 अप्रैल, 2020 तक भारत में भी लॉकडाउन लग गया।

मेरा पुत्र व पुत्री दिल्ली में ही रह गए। अब 14 अप्रैल 2020 तक न वे जयपुर आ सकते थे और न हम दिल्ली जाकर उन्हें ला सकते थे। मेरे मन में एक आशा थी कि 16 अप्रैल 2020 को किसी तरह विवाह तो सम्पन्न हो जाएगा। 14 अप्रैल की सुबह तक यह समझ नहीं आ रहा था कि आज लॉकडाउन समाप्त हो जाएगा या कुछ दिन और बढ़ा दिया जाएगा। तभी माननीय प्रधानमंत्री जी ने टीवी पर बताया कि लॉक डाउन 3 मई तक बढ़ा दिया गया है। मेरा मन आशंका से घिर गया और अनिश्चितता बढ़ गई। कुछ समझ नहीं आ रहा था क्या करें। तभी मन में विचार आया कि अगर हमें दिल्ली जाने के लिए कोई पास मिल जाए तो शायद वहाँ विवाह सम्पन्न कर पाएँ। मगर पास कैसे बने इसका कोई रास्ता समझ नहीं आ रहा था। तभी मेरे जेठजी का फोन आया और उन्होने मुझसे शादी का कार्ड व अन्य पहचान-पत्र आदि दस्तावेज़ मांगे। फिर कुछ देर बाद उन्होंने बताया कि 15 अप्रैल को दिल्ली जाने व 17 अप्रैल को जयपुर वापस आने का पास बन गया है। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। ऐसा लगा जैसे ईश्वर भी चाहते हैं कि मेरी पुत्री का विवाह निर्धारित शुभ मुहूर्त पर ही सम्पन्न हो जाए। मैंने तुरंत वर पक्ष को फोन किया कि हम दिल्ली आ रहे हैं और वे वहाँ की पुलिस से अपने घर में विवाह सम्पन्न करवाने की अनुमति प्राप्त कर लें। यह सुनकर वे भी बहुत खुश हुए।

वर पक्ष ने जब वहाँ के पुलिस अधिकारियों से अनुमति हेतु बात की तो केवल 7 लोगों के ही एकत्र होने की अनुमति प्राप्त हो सकी : वर-वधू, उनके माता-पिता व पंडित जी। हमने उनसे अपने पुत्र को भी सम्मिलित होने का आग्रह किया एवं अनुमति मांगी, जो इस शर्त पर मिली कि हम सब सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन करेंगे। अब बारी थी, पंडित जी को तलाश करने की। इन हालात में, जब सभी मंदिर व गुरुद्वारे बंद थे, पंडित जी को घर बुला कर शादी करवाने के लिए मनाना भी एक बड़ा कार्य था, परंतु, जहां चाह, वहाँ राह। मेरी देवरानी जो विदेश से विवाह में सम्मलित होने आई थी, दिल्ली की हैं - उन्होंने यह कार्य आसान कर दिया। उनकी जान-पहचान में एक पंडितजी मिल गए जो कोरोना वाइरस संबंधी सावधानियों से भी भली-भांति परिचित थे। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे नियत समय पर विवाह संबंधी सामग्री लेकर पहुँच जाएंगे।

अगली सुबह यानी 15 अप्रैल को हम दिल्ली के लिए निकल पड़े। रास्ते भर मन आशंकाओं से भरा रहा, न जाने कब कहां क्या अड़चन आ जाए। हमारे साथ कार में पुत्रवधू व 6 माह का पौत्र भी था। अनेक स्थानों पर, पुलिस द्वारा रोककर पूछताछ की गई, लेकिन पास के चलते हम दिल्ली तक आराम से पहुँच गए। अब एक पड़ाव पार हो गया था। अब मेरा पूरा ध्यान सीमित समय व सीमित सुविधाओं में विवाह सम्पन्न करवाने पर था। उस दिन मेरे पुत्र, पुत्री व होने वाले दामाद ने दोनों ओर के परिवार के सभी रिश्तेदारों व मित्रों को ज़ूम वेबसाइट पर जोड़ दिया और उन्हें 16 अप्रैल यानी विवाह के दिन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विवाह में सम्मिलित होने का निमंत्रण भी दे दिया।

इस विवाह में दोनों परिवार के हम सातों जने ही कैटरर, डेकोरेटर, पार्लर, फॉटोग्राफर सब थे। नियत समय पर हम अपने पुत्र व पुत्री को लेकर वर पक्ष के घर पहुंचे और विवाह से पूर्व की सभी तैयारियों में उनकी सहायता की। वे भी पंडित जी के साथ मिल कर विवाह मंडप व विवाह सामग्री जुटाने में लगे थे। कुछ ही देर में, हम सातों विवाह के लिए पूजा स्थल पर बैठ गए। दोनों पक्षों के सभी रिश्तेदार एवं मित्र देश-विदेश से हमारे साथ ऑनलाइन पर जुड़ गए। वे सभी उसी तरह से तैयार होकर बैठे थे, जैसे विवाह में सम्मलित होने के लिए होते हैं। वे सभी उत्साहित होकर एक दूसरे की कुशल क्षेम पूछ रहे थे एवं विवाह में सम्मलित करने के लिए हमें धन्यवाद दे रहे थे। शुभ-मुहूर्त पर पंडित जी ने विवाह की विधि आरंभ की, हवन हुआ, फेरे हुए, कन्यादान हुआ, फूलों की वर्षा हुई, शंखनाद हुआ और यह सब सभी लोगों ने तीन घंटे तक अपने-अपने घरों से देखा व वर-वधू को आशीर्वाद दिया। यह समय बहुत भावुक कर देने वाला था। कुछ रीति-रिवाजों के बाद हम अपनी बेटी को विदा कर अपने पुत्र के साथ देवरानी के घर आ गए। उस दिन देर रात तक सभी रिश्तेदार व मित्र हमें फोन पर बधाइयाँ देते रहे व वर-वधू के सुखी जीवन की मंगल कामना करते रहे। सभी का यह मानना था कि पहली बार ऑनलाइन पर उन्होंने इतनी अच्छी व रीति रिवाज के साथ शादी तीन घंटे बैठ कर देखी है।

अगली सुबह 17 अप्रैल को मैं अपने पति के साथ वापस जयपुर के लिए रवाना हो गई। कुछ दूर चलने के बाद अचानक हमारी कार का एक टायर पंचर हो गया। लॉकडाउन की अवस्था में दूर-दूर तक न तो कोई आदमी नजर आया और न कहीं कोई पंचर ठीक करने की दुकान नजर आई। मैंने मन ही मन ईश्वर को याद किया। अचानक, खेतों की पगडंडी से होकर दो व्यक्ति आए और हमसे बोले कि वे टायर बदलने में सहायता कर देंगे। टायर बदलने के बाद जब हमने उन्हें कुछ देना चाहा, तो वे यह कहते हुए कि ''आखिर आदमी ही आदमी के काम आता है'', वापस खेतों में गुम हो गए। हम दोनों विस्मित थे। अभी हम थोड़ी दूर ही चले थे कि एक पंचर की दुकान नजर आ गई, जिस पर लिखा था ''हबीब खान पंचर वाले'', एक आदमी वहीं पेड़ के नीचे सो रहा था। हमने उसे जगाकर पूछा क्या वह हमारी गाड़ी का पंचर टायर ठीक कर देगा तो उसने कहा हाँ, जरूर और वह काम में जुट गया। मुझे लगा कि लॉकडाउन की स्थिति में इंसान के रूप में ईश्वर ने स्वयं आकर हमारी मदद की है। मजहब या जाति इंसानियत के रिश्ते में कहीं मायने नहीं रखती।

उस शाम जब हम अपने घर पहुंचे, तो हमारी बिल्डिंग वाले एवं पड़ोसी पुत्री के विवाह के उपलक्ष में फोन पर हमें बधाई और शुभकामनाएँ देने लगे। सभी कहने लगे कि इस वातावरण में हमने सबको एक नयी राह दिखाई है। अगले दिन, जब मैंने अपने कार्यालय/ऑफिस में यह खबर सुनाई तो मेरे साथियों एवं अधिकारियों ने भी हमारी इस अद्भुत शादी के लिए बधाई और नव वर-वधू को शुभकमनाएँ दीं।

इस तरह हमारे खानदान की पहली ऑनलाइन शादी सम्पन्न हुई। भला हो नई तकनीक का, जिसके कारण देश-विदेश से सभी ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विवाह के लग्न-मंडप में भाग लिया और वर-वधू को अपना आशीर्वाद दिया। कन्यादान के बाद हम पहली बार स्वयं को प्रसन्नचित महसूस कर रहे थे। केवल तीन दिनों की अवधि में यह घटना सचमुच घटी थी या हमने कोई स्वप्न देखा था। होनी को कौन टाल सकता है, शायद ईश्वर की यही मर्जी थी। इसीलिए वे विभिन्न रूपों में अलग अलग स्थान पर हमारी मदद कर रहे थे। पूरे वर्ष जिस विवाह की इतनी तैयारियाँ हो रही थीं, सहसा विश्वास नहीं होता, कि वो बिना बैंड बाजे, साज-सज्जा, मेहमान और बाराती के संपन्न हो गई और वह भी उत्साह व प्रसन्नता से भरपूर। इस वृत्तान्त में, मैं विदेश से आए अपने पुत्र से मिली, उसे उसकी पत्नी व पुत्र से मिलाया, दिल्ली में उसके ससुराल-पक्ष से, विदेश से आई अपनी देवरानी व उसके पुत्र से मिली, पुत्री का विवाह किया व वर पक्ष के साथ कुछ समय बिताया। सभी जगह लॉकडाउन के मास्क तथा सोशल डिस्टेन्सिंग संबंधी नियमों का पालन किया गया। सच ही कहा है - वक्त लम्हा-लम्हा गुजरता रहा, कारवां बढ़ता रहा !!

कांता गुरसाहनी
उप-प्रबन्धक
पीएनबी
अंचल कार्यालय, जयपुर

पराजित मानवता (लघुकथा)

चंपा देवी की उम्र 50 वर्ष थी, किंतु परिवार की जिम्मेदारियों के बोझ ने उसे समय से पहले बूढ़िया बना दिया था। दो जवान बेटियों की शादी की चिंता उसे सताती रहती थी। जहरीली शराब पीने के कारण उसके पति की मृत्यु दो वर्ष पहले ही हो चुकी थी। कोलकाता के क्रिकेट स्टेडियम के बाहर स्वामी विवेकानंद की एक मूर्ति थी। परिवार की गुजर-बसर के लिए उस ऊंची मूर्ति को जाने वाली सीढ़ियों के पास बैठकर खीरे भुट्टे, बेर इत्यादि बेचती थी, जिनसे दिनभर में उसे गुजर-बसर के लायक आय हो जाती थी ।

वर्ष में एक बार मार्च के महीने में वहां एक खेलकूद प्रतियोगिता हुआ करती थी। उस दिन मैराथन दौड़ का दिन था, जो कि स्टेडियम में ही खत्म होने वाली थी।

आज सुबह से ही उसे ज्वर था किन्तु वह जल्दी उठकर काम पर जाने के लिए तैयार हो गई थी, क्योंकि आज बहुत भीड़भाड़ रहने के कारण अच्छी कमाई की उम्मीद थी। उस दिन तपती धूप थी। अभी आधा दिन ही बीता था कि ज्वर के कारण उसका शरीर तपने लगा, जिस कारणवश उसे हल्के चक्कर आने लगे। धीरे धीरे सीढ़ियां चढ़कर वह मूर्ति के पास छाया में जाकर बैठना चाहती थी। पर अभी आधी सीढ़ियां ही चढ़ी थीं कि तभी अचानक चक्कर खाकर वह गिर पड़ी। रक्त की एक धारा उसके माथे से फूटकर बह निकली। काफी साहस करने पर भी वह उठ नहीं पा रही थी और ज्वर के कारण अर्द्धमूर्च्छा में धीरे-धीरे कराहने लगी। मैराथन दौड़ खत्म ही हो रही थी और धावक अंतिम दौर में तेजी से दौड़ते हुए निकल रहे थे।

अनेक लोग चंपा देवी के पास से गुजरे, कुछ ने उसे दया की दृष्टि से देखा तथा कुछ ने तिरस्कार भाव से। किंतु किसी के भी पास चंपा देवी की सहायता करने के लिए समय नहीं था। सभी को रेस जीतने और अपनी रेस के समय को कम से कम रखने की होड़ थी ।

दोपहर 3 बजे के बाद शाम ढल चली थी। डूबते हुए सूरज के साथ चंपा देवी की सांसों की डोर भी छूट रही थी। पता नहीं आज की मैराथन दौड़ को कौन जीते या कितने लोगों को उत्कृष्टता का प्रमाणपत्र मिले, किंतु मानवता के पथ पर सभी असफल हो चुके थे।

श्री प्रवीण मित्थल
सहायक महाप्रबंधक (विधि)
सिडबी, क्षेत्रीय कार्यालय
जयपुर

एक नयी शुरुआत : सफल जीवन के नियम

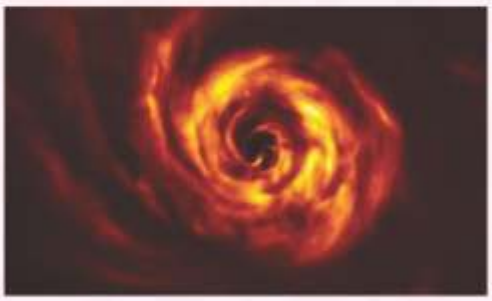

एक आकलन के अनुसार यदि एक इन्सान की औसत आयु 78 वर्ष मान ली जाए तो अपने जीवन को सफल बनाने के लिए हमारे पास केवल 3500 दिन (9 वर्ष व 6 महीने) ही होते हैं! हम औसतन 29 वर्ष सोने में, 3-4 वर्ष शिक्षा में, 10-12 वर्ष रोजगार में, 9-10 वर्ष मनोरंजन में, 12-13 वर्ष अन्य रोजमर्रा के कामों में जैसे खाने-पीने, यात्रा, नित्य कर्म, घर के काम इत्यादि में खर्च कर देते हैं। इस तरह हमारे पास अपने सपनों को पूरा करने व कुछ कर दिखाने के लिए मात्र 3500 दिन अथवा 84,000 घंटे ही होते हैं।

संसार की सबसे मूल्यवान वस्तु समय ही है। लेकिन वर्तमान में ज्यादातर लोग निराशामय जिंदगी जी रहे हैं और वे इंतजार कर रहे होते हैं कि उनके जीवन में कोई चमत्कार होगा, जो उनकी निराशामय जिंदगी को बदल देगा। जबकि वह चमत्कार आज व अभी से शुरू हो सकता है और उस चमत्कार को करने वाले व्यक्ति हम स्वयं ही होंगे, क्योंकि उस चमत्कार को हमारे अलावा कोई दूसरा व्यक्ति कर ही नहीं सकता। इस शुरुआत के लिए हमें अपनी सोच व मान्यताओं को बदलना होगा, क्योंकि हमारे साथ वही होता है जो हम मानते हैं। भौंरे का शरीर बहुत भारी होता है, प्रकृति के नियमों के अनुसार वह उड़ नहीं सकता। लेकिन भौंरे को इस बात का पता नहीं होता और वह यह मानता है कि वह उड़ सकता है इसलिए वह उड़ पाता है। सबसे पहले हमें इस गलत धारणा को बदलना होगा कि हमारे साथ वही होता है जो भाग्य में लिखा होता है। क्योंकि ऐसा होता तो आज हम ईश्वर की पूजा न कर रहे होते बल्कि उन्हें बद-दुआएं दे रहे होते। हमारे साथ जो कुछ भी होता है उसके जिम्मेदार हम स्वयं होते हैं इसलिए खुश रहना या ना रहना केवल हम पर ही निर्भर करता है।

सफल जीवन के नियम :-

यदि हम एक नयी शुरुआत करना चाहते हैं तो इसके लिए हमें कुछ नियमों का पालन करना होगा। ये नियम किसी की भी जिंदगी को बदल सकते हैं :-

आत्मविश्वास :-

आत्मविश्वास से आशय स्वयं पर विश्वास एवं नियंत्रण से है। हमारे जीवन में आत्मविश्वास का होना उतना ही आवश्यक है जितना किसी फूल में खुशबू का होना। आत्मविश्वास के बगैर हमारी जिंदगी एक जिन्दा लाश के समान हो जाती है। कोई भी व्यक्ति कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, वह आत्मविश्वास के बिना कुछ नहीं कर सकता। आत्मविश्वास ही सफलता की नींव है। आत्मविश्वास की कमी के कारण व्यक्ति अपने द्वारा किए गए कार्य पर संदेह करता है। आत्मविश्वास उसी व्यक्ति के पास होता है जो स्वयं से संतुष्ट होता है और जिसके पास दृढ़ निश्चय, मेहनत व लगन, साहस, वचनबद्धता आदि गुणों की सम्पति होती है।

आत्मविश्वास कैसे बढाएं :- आप स्वयं पर विश्वास रखें, लक्ष्य बनाएँ और उन्हें पूरा करने के लिए वचनबद्ध रहें। जब आप अपने द्वारा बनाये गए लक्ष्य को पूरा करते हैं तो यह आपके आत्मविश्वास को कई गुना बढ़ा देता है। खुश रहें, खुद को प्रेरित करें, असफलता से दुखी न होकर उससे शिक्षा लें। क्योंकि अनुभव हमेशा बुरे अनुभव से ही आता है। सकारात्मक सोचें, विनम्र रहें और दिन की शुरुआत किसी अच्छे कार्य से करें। इस दुनिया में नामुमकिन कुछ भी नहीं है। आत्मविश्वास का सबसे बड़ा दुशमन किसी भी कार्य को करने में असफल होने का डर है। डर को हटाना है तो वह कार्य अवश्य करें जिसमें आपको डर लगता है। डर के आगे जीत है। सच बोलें, ईमानदार रहें, धूम्रपान न करें, प्रकृति से जुड़ें, अच्छे कार्य करें, जरूरतमंद की मदद करें। क्योंकि ऐसे कार्य आपको सकारात्मक शक्ति देते हैं। वहीं दूसरी ओर गलत कार्य एवं बुरी आदतें हमारे आत्मविश्वास को गिरा देते हैं। वही कार्य करें जिसमें आपकी रुचि हो और कोशिश करें कि अपने कैरियर को उसी दिशा में आगे ले जाएँ। वर्तमान में जिएँ, सकारात्मक सोचें, अच्छे मित्र बनाएँ, बच्चों से दोस्ती करें, आत्मचिंतन करें।

स्वतंत्रता:-

स्वतंत्रता का अर्थ स्वतंत्र सोच एवं आत्मनिर्भरता है। हमारी खुशियों का सबसे बड़ा दुश्मन निर्भरता ही है और वर्तमान में खुशियाँ कम होने का कारण निर्भरता का बढ़ना ही है।

''सबसे बड़ा यही रोग, क्या कहेंगे लोग'':- ज्यादातर लोग कोई भी कार्य करने से पहले कई बार यह सोचते हैं कि वह कार्य करने से लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे या क्या कहेंगे। इसलिए वे कोई निर्णय ले ही नहीं पाते, सोचते ही रह जाते हैं और समय उनके हाथ से पानी की तरह निकल जाता है। ऐसे लोग बाद में पछताते हैं। इसलिए ज्यादा मत सोचिए। जो आपको सही लगे वह कर डालिए, क्योंकि शायद ही कोई ऐसा कार्य होगा जो सभी लोगों को एक साथ पसंद आए।

अपनी ख़ुशी को खुद नियंत्रित कीजिए :- वर्तमान में ज्यादातर लोगों की खुशियाँ परिस्थितियों पर निर्भर हैं। ऐसे लोग अनुकूल परिस्थिति में खुश और प्रतिकूल परिस्थियों में दुखी हो जाते हैं। उदाहरण के लिए अगर किसी व्यक्ति का कोई काम बन जाता है तो वह खुश हो जाता है और काम न बनने पर वह दुखी हो जाता है। हर परिस्थिति में खुश रहें क्योंकि प्रयास करना हमारे हाथ में है लेकिन परिणाम अथवा परिस्थिति हमारे हाथ में नहीं है। परिस्थिति अनुकूल या प्रतिकूल कैसी भी हो सकती है लेकिन उसपर प्रतिक्रिया अच्छी ही होनी चाहिए क्योंकि प्रतिक्रिया करना हमारे हाथ में है।

आत्मनिर्भर बनें :- निर्भरता ही खुशियों की दुश्मन है। इसलिए जहाँ तक हो सके दूसरों से अपेक्षाएँ कम करें, अपना कार्य स्वयं करें और स्वालंबन अपनाएँ। दूसरों के कर्मों या विचारों से दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि दूसरों के विचार या कर्म हमारे नियंत्रण में नहीं हैं। अगर आप उन बातों या परिस्थितियों की वजह से दुखी हो जाते हैं जो आपके नियंत्रण में नहीं हैं तो इसका परिणाम समय की बर्बादी व भविष्य में पछतावा है।

वर्तमान में जिएँ :-

हमारे दिमाग में दिनभर में हजारों विचार आते हैं और हमारी सफलता और असफलता इन्हीं विचारों की (गुणवत्ता) पर निर्भर करती है। ज्यादातर लोगों का 70% से 90% तक समय भूतकाल, भविष्यकाल एवं व्यर्थ की बातें सोचने में चला जाता है। भूतकाल हमें अनुभव देता है और भविष्यकाल के लिए हमें योजना बनानी होती है, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि हम अपना सारा समय इसी में खर्च कर दें। हमें वर्तमान में ही रहना चाहिए और इसे बेहतर बनाना चाहिए क्योंकि न तो भूतकाल, न ही भविष्यकाल पर हमारा नियंत्रण है। अगर खुश रहना है और सफल होना है तो उस बारे में सोचना बंद कर दें जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं है।

मेहनत एवं लगन :-

किसी विद्वान ने कहा है कि मेहनत करने से पहले कामयाबी केवल शब्दकोश में ही मिल सकती है। मेहनत का अर्थ केवल शारीरिक काम से नहीं है। मेहनत शारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार से हो सकती है। अनुभव यही कहता है कि मानसिक मेहनत, शारीरिक मेहनत से ज्यादा मूल्यवान होती है। कुछ लोग लक्ष्य तो बहुत बड़ा बना लेते हैं लेकिन मेहनत नहीं करते और फिर अपने-अपने लक्ष्य को बदलते रहते हैं। ऐसे लोग केवल योजना बनाते रह जाते हैं। मेहनत व लगन से बड़े से बड़ा मुश्किल कार्य आसान हो जाता है। अगर लक्ष्य को प्राप्त करना है तो बीच में आने वाली बाधाओं को पार करना होगा, मेहनत करनी होगी, बार-बार कोशिश करनी होगी। असफल लोगों के पास बचने का एकमात्र साधन यह होता है कि वे मुसीबत आने पर अपने लक्ष्य को बदल देते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो मेहनत तो करते हैं लेकिन एक बार विफल होने पर निराश होकर कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं। इसलिए मेहनत के साथ-साथ लगन व दृढ़ निश्चय का होना भी अति आवश्यक है।

व्यवहार कुशलता:-

व्यवहार कुशल व्यक्ति जहाँ भी जाता है, वह वहां के वातावरण को खुशियों से भर देता है। ऐसे लोगों को समाज सम्मान की दृष्टि से देखता है। ऐसे लोग नम्रता व मुस्कराहट के साथ व्यवहार करते हैं और हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहते हैं। शिष्टाचार ही सबसे उत्तम सुन्दरता है जिसके बिना व्यक्ति केवल स्वयं तक सीमित हो जाता है और समाज की नजर में स्वार्थी हो जाता है। जब आपके मित्रों की संख्या बढ़ने लगे तो समझ लीजिए कि आपने व्यवहार कुशलता का जादू सीख लिया है। शिष्टाचारी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र भी जाए वहाँ उनके मित्र बन जाते हैं जो उसके लिए जरूरत पड़ने पर मर-मिटने को तैयार रहते हैं।

चरित्र व्यवहार कुशलता की नींव है और चरित्रहीन व्यक्ति कभी भी शिष्टाचारी नहीं बन सकता। चरित्र व्यक्ति की परछाईं होती है और समाज में व्यक्ति को चेहरे से नहीं बल्कि चरित्र से पहचाना जाता है। चरित्र का निर्माण नैतिक मूल्यों, संस्कारों, शिक्षा एवं आदतों से होता है। वर्तालाप दक्षता व्यवहार कुशलता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वाणी में वह शक्ति है जो वातावरण में मिठास घोल कर उसे खुशियों से भर सकती है या उसमें चिंगारी लगा कर आग भड़का सकती है। शब्द संसार बदल सकते हैं। सोच-समझ कर बोलना, कम शब्दों में ज्यादा बात कहना, व्यर्थ की बातें न करना, अच्छाई खोजना, तारीफ़ करना, दूसरों की बात को सुनना और महत्त्व देना, विनम्र रहना, गलतियाँ स्वीकारना, ये वार्तालाप दक्षता के लिए जरूरी हैं।

जीवन की सफलता के इन पांच नियमों में इतनी शक्ति है कि ये आपके जीवन को बदल देंगे और आपमें सपनों को हकीकत में बदलने की शक्ति जगाएंगे।

राकेश कुमार मीना
कृषि प्रबन्धक
बैंक ऑफ महाराष्ट्र
अंचल कार्यालय, जयपुर

अपना–अपना नजरिया

आपका नजरिया ही आपकी नियति तय करता है। सफल और विफल अथवा विजयी और पराजित में बस थोड़ा–सा अंतर होता है जो उनमें बहुत बड़ा अंतर पैदा कर देता है। यह अंतर होता है, नजरिये का – आपके दृष्टिकोण का।

नजरिया क्या है – नजरिया मानव के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक व्यक्तित्व के विकास के साथ–साथ विकसित होती एक मानव वृत्ति है, जोकि मानव की सोच पर उसके आसपास के भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक परिवेश के प्रभाव के रूप में परिणामित होती है।

वास्तव में कोई व्यक्ति विशेष नजरिया लेकर पैदा नहीं होता है। नजरिया निर्भर करता है हमारे व्यक्तित्व पर, चहुंओर व्याप्त जैविक व अजैविक परिवेश में उपजी विभिन्न परिस्थितियों के प्रभाव पर और साथ ही उससे प्राप्त अनुभव पर। नजरिया वास्तव में बहुत ही महत्वपूर्ण मानव वृत्ति है। नजरिया देखने का, सोचने का, समझने का। एक ही बात, वस्तु, सवाल और परिस्थिति के लिए अलग–अलग तरीके का आचरण किया जाता है। नजरिया ही होता है, जिसकी वजह से हम जीवन के विभिन्न पलों में खुशी या गम महसूस करते हैं।

ह्विंस्टन चर्चिल के शब्दों में नजरिया चीज बहुत छोटी है, पर इससे फर्क बहुत पड़ता है। जीवन सभी को जीना है। यह आसान नहीं मगर जीने की राह पर चलना सभी को है। कई तरह के मोड़ आते हैं, जिंदगी की राह में, आसान भी, मुश्किल भी, कुछ इतने मुश्किल कि हर तरफ निराशा दिखाई देती है, बस ऐसी ही परिस्थिति में साथ देता है आपका नजरिया, जो आपको हर विपरीत परिस्थिति में लड़ने और जीतने की हिम्मत देता है। हां,आप हारने से पहले ही हार जाते हैं, यदि आपका नजरिया नकारात्मक है और आप लड़ने का प्रयास ही नहीं करते।

किसी भी कार्य में सफल या असफल होना, किसी भी चीज में अच्छाई या बुराई देखना, यह निर्भर करता है – मनुष्य के नजरिये पर। किसी व्यक्ति के सोचने का तरीका सकारात्मक होता है तो किसी का नकारात्मक। सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति विनम्र, धैर्यवान, आत्मविश्वासी, आशावादी और दूसरों का खयाल रखने वाले होते हैं, वहीं नकारात्मक नजरिये वाले व्यक्ति निराशावादी, आलसी, ईर्ष्यालु, व्यावसायिक आलोचक और टालमटोली स्वभाव के होते हैं।

सकारात्मक नजरिया : सकारात्मक नजरिया वास्तव में कामयाबी की बुनियाद होती है। सकारात्मक नजरिया ही किसी व्यक्ति की सफलता के विस्तार का पैमाना है, यह व्यक्ति को समाज में योगदान देने वाला बनाता है। सकारात्मक नजरिये वाले माता–पिता अपनी संतान में सकारात्मक सोच और जीवने के प्रति जीवंत नजरिया विकसित कर पाते हैं। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में किए गए एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि जब कोई व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है तो उसमें 85 फीसदी हिस्सेदारी सकारात्मक नजरिये की होती है। अत: व्यक्ति को सकारात्मक नजरिया अपनाने का प्रयास करना चाहिए। हर चीज और व्यक्ति में अच्छाई देखने और खोजने का प्रयास करना चाहिए। आखिर बंद घड़ी भी दिन में दो बार सही समय बताती है। व्यक्ति को अहसानमंद होने का, लगातार ज्ञान हासिल करने का, सकारात्मक सोच के साथ जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

नजरिया बदल के देखो, सारा जहान तुम्हारा है।
परिंदा बनके तो देखो, सारा आसमान तुम्हारा है।।

नकारात्मक नजरिया : दुर्भाग्यवश कुछ लोग ऐसे परिवेश एवं सोच के साथ पले–बढ़े होते हैं, या वे स्वभाव से ही ऐसे होते हैं कि उन्हें हर वस्तु, परिस्थिति और इंसान में नकारात्मक पहलू ही नजर आते हैं। गुलाब के पौधे में जहां किसी को सुंदर मनमोहक फूल नजर आता है, वहीं नकारात्मक नजरिये वाले लोगों को सिर्फ कांटे। उन्हें हमेशा अपने भाग्य से शिकायत रहती है। कुछ लोग तो अपने जन्मदिन पर भी यह सोचकर दुखी होते हैं कि उनकी उम्र कम हो गई। ऐसे लोग समस्याओं को आगे बढ़ते हुए देखते हैं, उनके पास सब कुछ होते हुए भी वे परेशान ही रहते हैं।

स्कॉट टैमिल्टन का कहना है – हमारा नकारात्मक दृष्टिकोण ही हमारे जीवन की एकमात्र विकलांगता है।

वास्तव में भगवान ने हर इंसान को एक जैसा बनाया है – दो हाथ, दो पैर, दो आंखें, दो कान और एक बहुत ही शानदार मस्तिष्क। लेकिन हर इंसान का जीवन अलग–अलग होता है। कुछ इंसान जिंदगी की यात्रा में निरंतर रूप से सफलता प्राप्त करते जाते हैं, वहीं कुछ व्यक्तियों की जिंदगी निराशा और दुख के अंधेरे में ही बीत जाती है। इसका एक ही कारण है – नजरिया। कुछ लोग जीवन के लक्ष्य को कठिन राह पर चलकर भी हासिल कर लेते हैं। क्योंकि उनके जीवन का लक्ष्य हर पल में जीना होता है। वे कठिन परिस्थितियों से डरते नहीं हैं, वरन् सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ उनका समाधान निकाल लेते हैं। नकारात्मक दृष्किोण वाले

लोग समस्याओं को समाधान रहित मानकर उन्हें ही अपनी नियति मान लेते हैं और रोते हुए दुनिया से चले जाते हैं।

अत: इंसान को सफल और सुकून भरा जीवन जीने के लिए अपना नजरिया हमेशा सकारात्मक रखना चाहिए क्योंकि जो हम देखते हैं, वही हम सोचते हैं और धीरे-धीरे वही समझने लगते हैं। नजरिया बदलकर इंसान अपना भविष्य बदल सकता है। नकारात्मक रवैया रखने वाले लोगों को अगर सफल होना है तो उन्हें चाहिए कि वे अपनी सोच बदलें, अच्छा सोचें, अच्छा खोजें और अच्छा करें। किसी भी क्षेत्र में पूर्ण राय बनाने से पहले अलग कोण से सोचें फिर निर्णय लें। सुख ढूंढने की, मुसीबतों में अवसर ढूंढने की आदत बनाएं।

नजरिये की ही है सारी बात : -

कोई मायूस है ये सोचकर कि सिर्फ एक ही मौका है।
तो कोई दिवाली मना रहा है कम से कम एक मौका तो है।

सच है, आपका नजरिया ही आपकी जिंदगी तय करता है। आप चाहें तो लोगों द्वारा फेंके गए पत्थरों से स्वयं को चोटिल कर सकते हैं या फिर उन्हीं पत्थरों का उपयोग मजबूत नींव बनाने में कर सकते हैं।

निष्कर्ष यही है कि आपका नजरिया ही आपके लिए जीवन और संसार का स्वरूप निर्धारित करता है और साथ ही दुनिया की नजरों में आपका स्वरूप। अत: नजरिया हमेशा सकारात्मक रखना चाहिए। सबकी अपनी जिंदगी, अपनी समस्याएं और प्राथमिकताएं हैं। पर प्रयास करना चाहिए जीवन के हर आयाम में सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने की, क्योंकि सकारात्मक ऊर्जा सफल जीवन का आधार है।

''कुछ और नहीं बस नजर और नजरिया है
चींटी के लिए एक कटोरी पानी भी दरिया है।
जिस बबूल में सबने देखे कांटे
वही ऊंट के लिए पेट भरने का जरिया है।।''

*****

किरण मीना
वरिष्ठ प्रबंधक (वसूली)
यूको बैंक
अंचल कार्यालय
जयपुर

मेरी उड़ान

कहता ये आसमान, कहता ये दरिया।
रोक ना पाएगा कोई मुझे, उठ! उड़ चल इन हवाओं के साथ।।
मैं ही बछेंद्री पाल, मैं ही भक्ति शर्मा, मैं ही कल्पना चावला।
मैं ही उषा अनंतसुब्रमण्यम, मैं ही इन्दिरा गांधी, मैं ही प्रतिभा पाटिल।।
देखी कहां अभी तुमने इन पंखों की जान?
बन खग उड़ चलूँ मैं, देखी कहां तुमने अभी मेरी उड़ान?

कभी माँ, कभी पुत्री, कभी बहन, कभी पत्नी बन निभाई मैंने रिश्तों की हर डोर।
कभी खिलाड़ी, कभी सैनिक, कभी राजनेत्री बन अब नापूंगी मैं हर छोर।।
मैं ही गीता फोगाट, मैं ही मेरीकॉम, मैं ही सिंधु।
मैं ही मधुबाला, मैं ही ऐश्वर्या राय, मैं ही दीपिका पादुकोण।।
देखी कहां अभी तुमने इन पंखों की जान?
बन खग उड़ चलूँ मैं, देखी कहां तुमने अभी मेरी उड़ान?

छूना है गगन, जाना हैं मेघों के पार।
धूप हो या छाँव, इस देश के अब हम नई पहरेदार।।
मैं ही काली, मैं ही शेरावाली, मैंने ही कराया दैत्यों में करुण क्रंदन।
मैं ही लक्ष्मी, मैं ही सरस्वती, कण-कण करता मेरा अभिनंदन।।
देखी कहां अभी तुमने इन पंखों की जान?
बन खग उड़ चलूँ मैं, देखी कहां तुमने अभी मेरी उड़ान?

कुचलो ना, उगने दो इन फूलों को।
भरने दो कुलांचें स्वच्छंद हिरणी से इन सपनों को।।
मैं ही सती, मैं ही पद्मावती, मैं ही लक्ष्मीबाई।
मैं ही सीता, मैं ही अहिल्या, मैं ही अनुसूइया।।
देखी कहां अभी तुमने इन पंखों की जान?
बन खग उड़ चलूँ मैं, देखी कहां तुमने अभी मेरी उड़ान?

आकाश भी मेरा, मेरा ही पाताल।
बिछाओ ना अब मुझ पर कोई जाल।।
मैं ही शांत जल का ठहराव, मैं ही समुद्रमंथन का अमृत।
मैं ही शीतल पवन का झोंका, मैं ही रक्तक्रान्ति का तूफान।।
देखी कहां अभी तुमने इन पंखों की जान?
बन खग उड़ चलूँ मैं, देखी कहां तुमने अभी मेरी उड़ान?

*****

मनीष मंडा
प्रबन्धक, नाबार्ड
राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय
जयपुर

लेह–लद्दाख : धरती पर स्वर्ग

कश्मीर के विषय में अमीर खुसरो की ये पंक्तियाँ प्रसिद्ध है :–

''गर फिरदौस बर रूये जमी अस्त, हमी अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त''

अर्थात धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है। मुझे इन पंक्तियों की यथार्थता का अनुभव तब हुआ जब मुझे पिछले दिनों जम्मू–कश्मीर स्थित लेह–लद्दाख जाने का अवसर प्राप्त हुआ। हिमाचल प्रदेश के काफी पर्वतीय स्थलों पर रहने और घूमने के पश्चात पर्वतीय स्थलों का एक चित्र मेरे मानस पटल पर स्थायी रूप से बन चुका था, परंतु लेह–लद्दाख की यात्रा ने न केवल मेरे इस भ्रम को तोड़ा, अपितु एक अविस्मरणीय अनुभव भी प्रदान किया। आइए आपको भी धरती के इस स्वर्ग के एक भाग की यात्रा पर अपने साथ लिए चलती हूँ।

समुद्र तल से 3500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित लेह–लद्दाख जम्मू काश्मीर राज्य के अंतर्गत आता है। यहाँ पहुंचने के लिए यदि आप सड़क मार्ग का चयन करते हैं, तो इसके दो रास्ते हैं – मनाली से रोहतांग होते हुए या श्रीनगर से कारगिल होते हुए। इसके अतिरिक्त आप वायुमार्ग से भी दिल्ली से लेह पहुँच सकते हैं। लेह में रहने के लिए होटलों के विकल्प के अतिरिक्त होम–स्टे का विकल्प भी बहुतायत में उपलब्ध है। होम–स्टे में रहते हुए जहां एक ओर आप यहाँ के स्थानीय लोगों की जीवन–शैली को निकट से देखने का अवसर प्राप्त करते हैं, वहीं घर जैसी अनुभूति भी आपको होती है।

लेह पहुँचने के पश्चात कम से कम एक दिन का विश्राम करने का परामर्श दिया जाता है जो समुद्र तल से इसकी ऊंचाई को देखते हुए अनिवार्य हो जाता है। अत: हमने भी एक दिन के विश्राम के पश्चात लेह–लद्दाख का भ्रमण करना प्रारम्भ किया। लेह के स्थानीय पर्यटक स्थलों का भ्रमण करने के लिए आप टैक्सी लेने के अतिरिक्त किराए पर बाइक लेकर अपनी सुविधानुसार घूम सकते हैं। बाइक के अतिरिक्त यहाँ किराए पर स्पोर्ट्स साइकिल का विकल्प भी है। लेह–लद्दाख में बहुत से ट्रैकिंग रूट और रोमांचक खेलों की उपलब्धता होने के कारण यहाँ पर न केवल भारतीय अपितु विदेशी पर्यटक भी भारी संख्या में आते हैं। लेह और इसके आसपास घूमने और देखने के लिए बहुत कुछ है। हमने स्थानीय स्थलों का भ्रमण करने के लिए बाइक किराए पर ली और निकल पड़े वहां की वादियों और घाटियों का भ्रमण करने के लिए। लेह में बौद्ध धर्मानुयायियों की अधिकता होने के कारण स्थान–स्थान पर स्तूप, मंदिर आदि का बाहुल्य है जो अपनी रंग–बिरंगी संरचना से हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं के समूचे परिदृश्य को रुमानियत से भर देते हैं।

सबसे पहले हम 'संगम' देखने गए। यह लेह से लगभग 50 कि मी है। सिंधु और ज़ंस्कार नदियों का संगम यहां स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। दो भिन्न रंगों की नदियों के इस संगम में रिवर राफ्टिंग का आनंद भी पर्यटक उठा सकते हैं। यहां पर लगे सूचना पट्ट के अनुसार यह विश्व का सर्वाधिक ऊंचाई पर स्थित राफ्टिंग प्वाइंट है। संगम में राफ्टिंग का आनंद उठाने के पश्चात हम लद्दाख की प्रसिद्ध 'मैगनैटिक हिल्स' देखने पहुंचे। लेह–कार्गिल–बाल्टिक नैशनल हाईवे पर स्थित 'मैगनैटिक हिल्स' लेह–लद्दाख आने वाले पर्यटकों के लिए एक बहुत बड़ा आकर्षण केंद्र है। लेह से 30 किलोमीटर दूरी पर स्थित इस स्थल पर 'मैगनैटिक हिल्स' के प्रभाव का अनुभव करने के लिए किराए पर चौपहिया बाइक उपलब्ध हैं। यहां पर लगे साइन बोर्ड की सूचना के अनुसार यहां गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रभाव खत्म हो जाता है और गाड़ी न्यूट्रल पर डालने से भी पहाड़ी की ओर ऊपर को जाने लगती है। यह अनुभूति वस्तुत: अद्भुत है।

इसके बाद श्री पत्थर साहब गुरुद्वारे के शांत और अलौकिक वातावरण में कुछ समय व्यतीत करते हुए हम 'हॉल ऑफ फेम' देखने गए। हमारे देश की सीमाओं की रक्षा करने के लिए कितने वीर जवानों ने भारत–पाक युद्धों के दौरान हंसते–हंसते अपने प्राणों की आहूति दी इसकी एक झांकी हमें यहां देखने को मिलती है। इस दुमंजिला संग्रहालय में कारगिल युद्ध के दौरान प्रयुक्त विभिन्न हथियारों, टैंकरों आदि को प्रदर्शित किया गया है। सियाचिन की परिस्थितियों की एक झलक और 'ऑपरेशन विजय' की डॉक्यूमेंटरी भी यहां देखी जा सकती है।

लेह–लद्दाख में बौद्ध मठ बहुत हैं जिनमें 'शांति स्तूप', 'स्पितुक गोम्पा', 'हेमिस', 'थिकसे', 'शे' प्रमुख और दर्शनीय हैं। यहाँ का लेह पैलेस मध्यकालीन तिब्बती स्थापत्य कला का अद्वितीय उदाहरण है। इन स्थानों के अतिरिक्त एक और स्थान है जो बहुत से पर्यटकों की सूची में सम्मलित है – 'थ्री इडियट्स' फिल्म में दर्शाया गया शे स्थित ड्रुक ह्वाइट लोटस स्कूल। फिल्म में आमिर खान का किरदार भी लद्दाखी वैज्ञानिक सोनम वांगचुक से प्रेरित था। स्थानीय पर्यटक स्थलों का भ्रमण करने के पश्चात हमने नूब्रा वैली, खारदुंग ला, हुंडर वैली और पंगगोंग लेक आदि जाने के लिए टैक्सी बुक की और अगले दिन प्रात: निकल पड़े। इन स्थानों का भ्रमण करने के लिए भारतीय और विदेशी दोनों पर्यटकों के लिए इनर लाइन परमिट बनवाना आवश्यक है।

हमारा सबसे पहला पड़ाव था – खारदुंग ला जो शायोक और नूब्रा घाटियों का प्रवेश द्वार है। यह विश्व का उच्चतम सड़क मार्ग है जो हर मौसम में खुला रहता है। यहां पर बहुत ही तीव्र वेग से शीत लहर चल रही थी और ऑक्सीजन की मात्रा बहुत ही कम थी। यहां कुछ समय के लिए 'दुनिया की छत पर' होने की अनुभूति लेकर हसीन वादियों, घाटियों और घटाओं का आनंद लेते हुए हम दीक्षित मठ पहुंचे जो लद्दाख की नूब्रा घाटी का सबसे पुराना और बड़ा मठ है। 106 फीट की बुद्ध प्रतिमा इसका मुख्य आकर्षण बिंदु है। यहां तक आते-आते सूरज ढलने लगा था और ठंड बढ़ने लगी थी। अत: हमने कुछ समय इस मठ के शांत और गर्म वातावरण में बिताया। नूब्रा घाटी का मुख्य आकर्षण हैं यहाँ के सैंड ड्यून्स, जिनके चलते लद्दाख को 'ठंडा रेगिस्तान' भी कहा जाता है। एक ओर हिमाच्छादित पर्वत शृंखलाएं और दूसरी ओर रेत ही रेत.....कुछ ऐसा नजारा प्रस्तुत करते हैं, जो शब्दातीत है।

नूब्रा वैली के हुंडर नामक गांव में हम रात को रुके। यहां होटल में रहने के अलावा टेंट तथा होम-स्टे में रहने के विकल्प भी हैं। बहुत ही शांत से इस छोटे से गांव में सेब और खुमानी के पेड़ हमें हर घर में दिखे जो फलों से लदे हुए थे। यहां भी हमने होम-स्टे का ही विकल्प चुना जिससे हमें यहां के लोगों और उनकी जीवन-शैली को करीब से देखने का अवसर मिला। यहां रात्रि 8 बजे के बाद बिजली नहीं आती, आत: सभी कार्य उससे पहले ही पूरे करने होते हैं। यहां के डबल हंप वाले ऊंट पर बैठकर सैंड ड्यून्स की सैर करने का भी अपना ही मजा है। इसके बाद हमने लद्दाखी संस्कृति की झलक देखने के लिए यहाँ आयोजित होने वाले स्थानीय संगीत और नृत्य के कार्यक्रम का आनंद लिया और रात्रि के भोजन में चूल्हे पर बने स्थानीय खाने का लुत्फ भी उठाया।

अगले दिन प्रात: हम पंगगोंग लेक के लिए निकल पड़े। नूब्रा वैली में ही हमें 'भाग मिल्खा भाग' का शूटिंग प्वाइंट भी देखने को मिला जहां मिल्खा सिंह के प्रशिक्षण संबंधी दृश्यों को फिल्माया गया था। यहां पर एटीवी (ऑल टेरेन वेहिकल) या क्वैड बाइक को चलाने का आनंद भी लिया जा सकता है। एक जगह हमें स्थानीय लद्दाखी लोग एक लंबी कतार में आते दिखाई दिए। ये लद्दाख को साफ-सुथरा बनाए रखने संबंधी पोस्टर लिए हुए एक थैले में कूड़ा, प्लास्टिक की खाली बोतलें, नमकीन, बिस्कुट आदि के लिफाफे एकत्रित करते हुए चल रहे थे। इसमें हर आयु के लोग थे। लद्दाखी लोग अपने परिवेश को स्वच्छ रखने के लिए बहुत दृढ़प्रतिज्ञ होते हैं। शायद यह एक प्रमुख कारण है कि इतनी अधिक संख्या में देशी और विदेशी पर्यटकों के यहां आने के बाबजूद बाकी पर्वतीय पर्यटक स्थानों की तुलना में यह बहुत ही साफ और स्वच्छ है।

हुंडर से लगभग 6 घंटे की दूरी पर पेंगगोंग स्थित है। समुद्र तल से 4,350 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह झील 134 कि.मी. लंबी है। यह भारत और चीन दोनों देशों की सीमाओं में फैली है और इसका 60% भाग चीन में है। सर्दियों में यह झील पूर्णत: जम जाती है। एकदम नीले रंग के पानी से भरी यह शांत झील तपस्या में लीन किसी योगी के समान प्रतीत हो रही थी। 'थ्री इडियट्स' फिल्म का अंतिम दृश्य यहीं फिल्माया गया था। समय और मौसम के अनुरूप इस झील के पानी का रंग परिवर्तित होता प्रतीत होता है। हम जब वहां पहुंचे उस समय दोपहर थी और मौसम एकदम साफ था अत: यह झील गहरे नीले रंग की और कांच की भांति पारदर्शी प्रतीत हो रही थी। शाम ढलते-ढलते इसका रंग हरीतिमा युक्त हो गया।

यहां रात को तापमान एकदम कम हो जाता है और हाथ-पैर ठंड में सुन्न होने लगते हैं और पानी बर्फ की तरह ठंडा हो जाता है। यहां भी रात को रहने के लिए कैंप बहुतायत में उपलब्ध हैं। इन कैंपों में रहने की एक अलग ही अनुभूति है। प्रात: काल जब हम पुन: इस झील के लिए निकले तो देखा कि रात में यहां की ऊपर की पहाड़ियों पर हिमपात हुआ है। अत: फिर से इस बार हमें इस झील का एक अलग रंग देखने को मिला। कुछ वक्त इसके किनारे बैठकर और इसके अद्वितीय और वर्णनातीत सौंदर्य को अपनी आंखों में बसाकर हम वापस लेह के लिए चल दिए।

लेह वापिस पहुंचने के लिए इस बार हमने कारु-चांग ला रास्ते को चुना। चांग-ला को विश्व की दूसरा उच्चतम सड़क मार्ग माना जाता है। जैसे ही हम यहां पहुंचे, यहां हिमपात प्रारंभ हो गया, अत: जल्द ही हमें लेह की वापसी यात्रा शुरू करनी पड़ी। लेह में हम खुमानी के विभिन्न प्रकार के उत्पाद, अनूठे स्वाद वाले स्थानीय सेब आदि अनेक चीजें खरीदने से खुद को नहीं रोक सके। एक सप्ताह की इस लद्दाख यात्रा में हमने एक अलग ही दुनिया देखी जहां का नैसर्गिक सौंदर्य हमें आजीवन अपने मोहपाश में बांधे रखेगा।

डॉ. निधि शर्मा
सहायक प्रबंधक
भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर

अब तो घर वापस आ जाओ!

(मेरी कल्पना में हिंदी लड़की है और इंगलिश लड़का है।)

हिंदी बोली संस्कृत से : माँ, मेरा वजूद सिमटता जा रहा है। मुझे डर लग रहा है कि मैं मिटा दी जाऊँगी। जिस तरह आजकल गर्भ में भ्रूण का पता लगाकर लड़की होने पर गर्भपात करा दिया जाता है। या पैदा होने के बाद भी नन्हीं परियों का गला दबाकर दफना दिया जाता है। माँ, क्या मैं भी भारत देश की अनचाही संतान हूँ? मुझे महसूस हो रहा है कि इंगलिश मेरा गला दबा कर मुझे खत्म कर देना चाहता है। माँ, मैं जीना चाहती हूँ। कहाँ हो तुम? जवाब क्यों नहीं देती?

- अब तो मैं नन्हें बालक के कंठ के प्रथम शब्दों में भी नहीं बची हूँ। हर तरफ मॉम और पॉ शब्द गूँज रहे हैं।
- अब तो मैं माताओं की लोरी में भी नहीं बची। शिशुओं को दुलारते समय माताओं के मुख से निकले 'आई लव यू' के शब्द मुझे चिढ़ाते हुए प्रतीत होते हैं।
- शिक्षकों की डाँट-फटकार में भी मैं नहीं हूँ। वहाँ भी डोंट डू, सिट डाउन, कम हियर, गो देयर की ही चीत्कार है।
- न मैं अभिवादन के सत्कार में हूँ न क्षमा याचना की करुण पुकार में हूँ। वहाँ भी हलो, गुड मॉर्निंग-इवनिंग और सॉरी की भरमार है।
- यहाँ तक कि कलियुग के मृत्यु संस्कार में भी मैं सिर्फ 'राम-नाम सत्य है' के अलावा कहीं नहीं बची हूँ।
- अब तो दादी-नानी की कहानियाँ भी बच्चों को इंगलिश के मुँह से सुनना पसंद आने लगा है।
- माँ, मेरे दिल में तो आज भी पहले की तरह अपने बच्चों के लिए प्यार उमड़ता है। फिर वे क्यों अपनी सगी माँ को छोड़कर हमेशा परायी गोद में दुबके रहते हैं? कभी बुलाने से भी मेरे पास नहीं आना चाहते!
- माँ, अपने ही घर में मुझे यह तिरस्कार क्यों झेलना पड़ रहा है? क्या मैं लड़की हूँ और इंग्लिश लड़का है इसलिए मुझे तिरस्कार और उसे प्यार नसीब हो रहा है?
- माँ, जिस तरह लड़के की चाह में बेटियों की बलि चढ़ाई जा रही है उसी तरह इंगलिश के लिए मुझ हिंदी की भी बलि चढ़ाई जा रही है!
- माँ, क्या ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' का मंत्र केवल रटने के लिए है? व्यवहार करने के लिए नहीं? दुनिया के सभी भाषा विज्ञानी इस बात पर एकमत हैं कि मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने से ही शिशुओं एवं बच्चों का सहज विकास होता है, तभी नई पीढ़ियों में श्रेष्ठ संस्कारों के बीज अंकुरित होते हैं। मानव सभ्यता का विकास सही दिशा में हो, और वह विकास वास्तविक एवं टिकाऊ हो, इसके लिए मातृभाषा में शिक्षा सबसे जरूरी चीज है। स्पेन के हिंदी विद्वान आस्कर पुजोल ने विदेशी भाषा में शिक्षा की तुलना में मातृभाषा में शिक्षा को - पैकेट के दूध की तुलना में माँ का दूध कहा है। लोग इस बात को कब समझेंगे?
- लड़के पाने के फैशन में जिस तरह आज लड़कियों का अनुपात लड़कों की तुलना में कम होता जा रहा है, उसी तरह से इंगलिश के फैशन में मेरी ही संतानों में मुझे माँ मानने-समझने और माँ कहकर पुकारने वालों की संख्या भी घटती जा रही है।

हिन्दी कहती अपनी संतानों से :

- क्या सरकार की बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ योजना जैसे अभियानों की तरह हिंदी बचाओ अभियान चलाने पर ही मेरा वजूद बचेगा? लेकिन इस तरह से वजूद बचाकर, सिर्फ जिंदा रहकर क्या मुझे संतोष मिलेगा? मुझे तो माँ होने का सम्मान और अपनी संतानों का प्यार चाहिए।
- मेरी प्यारी संतानों, मैं जानती हूँ तुम बड़े हो रहे हो। तुम अपने पंखों को आजमाओ, आसमान में ऊँची से ऊँची उड़ान भरो। मैं तुमको कब रोकती हूँ? मैं तुम्हारी प्रगति या आनंद में बाधा नहीं हूँ। तुम देश-दुनिया घूमो, चांद-तारे देख आओ। फूलों से, तितलियों से जी बहलाओ। लेकिन हमेशा के लिए घर छोड़कर न चले जाओ। जब जी भर जाए तब तो घर वापस आ जाया करो।

लोग मुझपर हँस रहे हैं, कह रहे हैं कि मेरी प्यारी संस्कृत माँ तो बहुत पहले ही चल बसी। वह मेरी बात नहीं सुन सकती, न ही कोई जवाब दे सकती है! मगर तुम तो सुन सकते हो मेरे बच्चो? तुम तो जिन्दा हो! हमेशा जीते रहो मेरे बच्चो! मैं तुम्हारे ही अपने घर में तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ। घर वापस आ जाओ! अपनी सगी माँ के पास, हिंदी के पास।

शैली सचदेवा
वरिष्ठ प्रबंधक (विधि)
यूको बैंक

नारी बिन युग कैसा ?

करो कामना बिन नारी के युग कैसा ?
सीता बिन ना राम होते,
राधा बिन ना कृष्ण होते
होते तुम और हम कैसे?
ना मां होती ना पुत्र होते
ना ही होता कोई वंश कभी
फिर क्यों बेटी जन्म पे रोते हो?
क्या वो कोई अभिशाप है?
या पुर्नजन्म का पाप है।
वो तो निर्मल वरदान है
वो तो भगीरथी सी महान् हैं
जो तार दे कुल सारा
जीवन के अंधकार में
करे उजियाला सूरज सा
वो (हमारा) अभिमान
ना गिरने दो, ना मिटने दो
काया से वो कई रूप हैं
जिसका वर्णन गहन है
मन से वो ममता है
जिसमें सजल प्रेम बहता
मैं ना कहती पूजा करो उसकी
बस दे दो उसे मान बड़ा
जी लेगी वो स्वप्न अपने
कर देगी पूर्ण स्वप्न तेरे
जीवनचक्र की श्रृंखला का
ये वो अभिन्न भाग है
जो बहा देगी जीवन सारा
प्रकृति के इस रूप को हरित रहने दो
करो कामना बिन नारी के युग कैसा ?
हो ये युग कैसा ?

*****

श्रीमती सीमा राठी
विशेष सहायक
इंडियन बैंक
अंबाबाड़ी शाखा, जयपुर

जीवन सफर है आगे बढ़ना

था समय मगर वो चला गया, एक मौका था जो चूक गया।
अब तीर चलाकर क्या हासिल, जब पंछी शाख से उड़ गया।।

गर सही वक्त पर जाग उठें, और सोच समझकर वार करें।
तो शत्रु पस्त हो जाता है, और जीवन सुलभ हो जाता है।।

है ये समाज उसके पीछे, जिसने नेकी का काम किया
औरों के दर्द मिटाने को, उसने न कभी आराम किया।।

हैं दर्द मेरे भारी इतने, कैसे औरों के कष्ट सहूँ।
अपनी इस एक कमी से मैं, कैसे उबरूं क्या जतन करूं।।

पराए दुखों को देख के जो, खुद के दर्दों को भूल गया।
औरों के कष्ट मिटाने को, जो धूल झाड़कर खडा हुआ।।

मालिक ने उसका साथ दिया, हर जन ने उसका साथ दिया।
हर राहे मुसाफ़िर ने अपना, उसको सफर में हाथ दिया।।

ऐसे ही मिलकर आपस में, हर जंग जीत हम जाएंगे।
औरों के दर्द बांटकर के, हम अपना दर्द भुलाएंगे।।

जो सफर में पीछे छूट गया, उसको नहीं हम पा सकते।
जीवन है बस आगे बढ़ना, हम राह यही चलते जाते।।

*****

गौरव कश्यप
प्रबंधक
केनरा बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

राजस्थान प्रांत के कुछ विशेष त्यौहार

हमारा देश अनेकता में एकता वाला देश कहा जाता है क्योंकि भारत में कुछ समय की दूरी पर बोली, भाषा, पहनावा, रहन-सहन इत्यादि बदल जाते हैं। यहाँ की संस्कृति पूरे विश्व में मशहूर है। इसी कारण सांस्कृतिक परंपरा से जुड़े सभी त्यौहार एवं उत्सव पूरे भारत वर्ष में मनाए जाते हैं। इसी क्रम में हमारे राजस्थान प्रांत में भी कुछ विशेष त्यौहार मनाए जाते हैं। राजस्थान में वर्षा बहुत कम होती है। अत: जैसे ही वर्षा ऋतु का मौसम आता है यहाँ के निवासी अनेक उत्सव व त्यौहारों का आयोजन करने लगते हैं। कुछ प्रमुख त्यौहारों के बारे में यहाँ वर्णन किया गया है, जिनमें राजस्थान की विशिष्ट संस्कृति अपने पूरे शबाब पर दिखती है।

- **हरियाली तीज त्यौहार :** तीज त्यौहार वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहले श्रावण शुक्ल की छोटी तीज और फिर भादवे के महीने की बड़ी तीज। परंतु छोटी तीज ही अधिक प्रसिद्ध है। ग्रीष्म ऋतु बीतने के बाद आने वाले त्यौहारों की कड़ी में यह पहला त्यौहार है इसलिए यह कहा भी जाता है कि:- ''तीज त्यौहार बावड़ी ले डूबी गणगौर'' (अर्थात तीज त्यौहारों को अपने साथ लेकर आती है जिनको गणगौर अपने साथ वापस लेकर जाती है)। तीज त्यौहार के लिए कहा जाता है कि यह मुख्य रूप से बालिकाओं एवं नव विवाहिताओं का त्यौहार है। तीज के एक दिन पहले सिंजारा मनाया जाता है। इस अवसर पर लड़कियां साज-श्रंगार करती हैं व हाथ पैरों में मेहँदी लगाती हैं। विवाहित लड़कियों के माता-पिता बेटियों की ससुराल को वस्त्र एवं शृंगार सामग्री भेंट स्वरूप भेजते हैं। नव विवाहित लड़कियां तीज के त्यौहार पर अपने पिता के घर आती हैं। राजस्थान में इस दिन सभी लड़कियां लहरिया पोशाक पहनती हैं और सहेलियों के साथ मिलकर वनों में जाकर झूला झूलती हैं। इस दिन सभी घरों में 'घेवर' बनाते हैं। यह मिठाई राजस्थान में इसी दिन के कारण बहुत प्रसिद्ध है।

  राजस्थान की राजधानी जयपुर में तीज त्यौहार का विशेष महत्व है जयपुर में यह त्यौहार बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। इसके साथ ही तीज की सवारी भी निकाली जाती है। स्त्रियाँ सवारी में लोक गीत गाती हैं।

- **गणगौर त्यौहार :** गणगौर राजस्थान व जयपुर के प्रसिद्ध त्यौहारों में से एक है। यह त्यौहार होली के 15 दिन बाद मनाया जाता है। गणगौर शब्द का अर्थ

है गौरी व पार्वती। यह त्यौहार पार्वती के गौने का प्रतीक है। स्त्रियाँ आभूषणों से सुसज्जित होकर सिर पर कलश रखकर गीत गाती हुई तालाबों पर जाती हैं। वहाँ से कलश में पानी भरकर उसे फूलों से सजाकर वापस घर लाती हैं। मिट्टी से निर्मित ईशर व गणगौर की 16 दिनों तक सुबह जल्दी भोर में पूजा की जाती है। सोलहवें दिन की पूजा के बाद किसी तालाब में बहा दिया जाता है या किसी कुएं में डाल दिया जाता है। 'तीज त्यौहार बावड़ी ले डूबी गणगौर' इस कहावत में 'ले डूबी गणगौर' पंक्ति का मतलब ये है कि गणगौर त्यौहारों को अपने साथ वापस लेकर जाती है अर्थात इसके बाद त्यौहारों का मौसम खत्म हो जाता है। जयपुर में काष्ठ से निर्मित गणगौर की सवारी निकाली जाती है जिसे देखने के लिए हजारों लोगों की भीड़ उमड़ती है। जब गणगौर की सवारी निकाली जाती है तब गुलाबी नगरी जयपुर के गुलाबी राजमार्ग और भी अधिक खिल उठते हैं।

- **शीतला अष्टमी :** यह त्यौहार चैत्र सुदी अष्टमी को मनाया जाता है। इस दिन शीतला माता की पूजा होती है। इस दिन एक दिन पूर्व में पकाया हुआ खाना (ठंडा बासी) ही शीतला माता को भोग लगाते हैं। परिवार के सभी सदस्य भी उसे ही खाते हैं। इसी अनुरूप इसे राजस्थान में 'बास्योड़ा' के नाम से भी जाना जाता है। यह माना जाता है कि यह माता बच्चों की चेचक आदि बीमारी से रक्षा करती है एवं इसी दिन घुड़ले का त्यौहार भी मनाया जाता है। स्त्रियाँ कुम्हार के घर जाती हैं और छेद किए हुए मटके में दीपक रखकर गीत गाती हुई अपने घर लौटती हैं। इस त्यौहार पर चैत्रसदी का मेला भी लगता है।

- **अक्षय तृतीया :** राजस्थान कृषि प्रधान राज्य है और यहाँ की कृषि वर्षा पर निर्भर है। अत: अक्षय तृतीया के दिन बाजरा, गेहूं, चना, तिल, जौ आदि सात अनाजों की पूजा कर शीघ्र वर्षा होने की कामना की जाती है। यह त्यौहार वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तीज को मनाया जाता है।

❖ **गोगानवमी :** गोगाजी राजस्थान के लोक देवता हैं। भादव शुक्ल पक्ष की नवमी को गोगाजी देवता का मेला लगता है एवं इस दिन राजस्थान में गोगाजी की पूजा की जाती है। लोकमान्यताओं व लोक कथाओं के अनुसार गोगाजी को साँपों के देवता के रूप में भी पूजा जाता है।

❖ **भैया दूज :** दीपावली उत्सव के आखरी दिन यह त्यौहार मनाया जाता है और इसी के साथ दीपावली का समापन हो जाता है। यह भाई बहन के प्रेम का प्रतीक है। इस दिन सभी बहनें अपने भाइयों की लंबी उम्र के लिए व्रत रखती हैं, तिलक लगाकर आरती उतारती हैं एवं राखी बांधती हैं।

❖ **गणेश चतुर्थी :** इस दिन गणपति की पूजा की जाती है। गणेश चतुर्थी के दिन जयपुर के मोती डूंगरी गणेश मंदिर में बहुत बड़ा मेला लगता है।

❖ **रामनवमी :** भगवान राम का जन्म चैत्र शुल्क नवमी को हुआ था इस दिन मंदिरों में रामायण की कथा पढ़ी जाती है व राम धुन बजाई जाती है।

❖ **रक्षाबंधन :** यह त्यौहार श्रावण शुक्ल की 15 वीं तिथि को यानी सावन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रक्षा बंधन पर बहनें अपने भाइयों की कलाई में राखी बांधती हैं और उनके लिए मंगल कामना करती हैं। भाई भी इस पवित्र बंधन के बदले अपनी बहनों को उपहार व उसकी रक्षा करने का वचन देते हैं। कहा जाता है कि चित्तौड़ की रानी कर्णावती ने दिल्ली के मुगल शासक हुमायूँ को राखी भेजकर अपना भाई बनाया और उस राखी का मान रखने के लिए हुमायूँ ने गुजरात के राजा से यद्ध करके कर्णावती की रक्षा की थी। तभी से रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया जाता है।

❖ **जन्माष्टमी :** भगवान श्री कृष्ण का जन्म भादो कृष्ण अष्टमी को हुआ था इसी स्मृति में जन्माष्टमी त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन राज्य के प्रमुख मंदिरों में कृष्ण लीला की झलकियाँ दिखाई जाती हैं व शोभायात्रा निकाली जाती है इस दिन भगवान श्री कृष्ण के भक्त व्रत रखते हैं व रात 12 बजे जन्म के पश्चात व्रत खोलते हैं।

❖ **दशहरा :** राजस्थान के त्यौहारों में दशहरा भी एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। इस दिन अनेक स्थानों पर खेजड़ी के वृक्ष की पूजा की जाती है। जयपुर में रामचन्द्र जी की सवारी निकाली जाती है तथा रावण के पुतले बनाकर उसका दहन किया जाता है। दशहरे पर कोटा में बहुत बड़ा मेला लगता है। जो राजस्थानी संस्कृति की विशिष्टता का प्रतीक है।

❖ **दीपावली :** यह त्यौहार पूरे भारत वर्ष में ही बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। लेकिन राजस्थान की दीपावली का एक अलग ही रंग है। खासकर जयपुर शहर में जो रंग-बिरंगी रोशनी की सजावट होती है, उसे देखने दुनियाभर से पर्यटक आते हैं।

❖ **गोवर्धन पूजा / अन्नकूट :** दीपावली के दूसरे दिन अर्थात कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट अथवा गोवर्धन को पूजा जाता है। मंदिर में पूजा के लिए अन्नकूट भोग तैयार किया जाता है। गोवर्धन का अर्थ है गौ वंश की वृद्धि होना। जयपुर में यह त्यौहार बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन ग्रामीण स्त्रियाँ गाय के बछड़े की पूजा करती हैं। गौवर्धन के दिन गोबर का गोवर्धन बनाया जाता है फिर उसकी पूजा की जाती है एवं गाय के बछड़े को उस पर चढ़ाकर बछड़े के पैरों से कुचलवाया जाता है। इस अवसर पर स्त्रियाँ लोक गीत गाती हैं एवं बच्चे पटाखे फोड़ते हैं।

❖ **होली:** जयपुर व संपूर्ण राजस्थान में यह त्यौहार बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। होली के दिन होलिका दहन होता है व उसके दूसरे दिन धुलन्डी खेली जाती है। इस त्यौहार को रंगों का त्यौहार भी कहा जाता है। इसमें स्त्रियाँ पुरुष व बच्चे समूहों में घर से बाहर निकलते हैं व 'चंग' नामक वाद्ययंत्र हाथ में लेकर फाग गीत गाते हुए चलते हैं। इस समय वे एक-दूसरे को रंग लगाकर होली की शुभकामनाएं देते हैं। ब्रज के निकट होने के कारण भरतपुर व अलवर में होली का त्यौहार विशेष उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भिनाय में होली खेलते समय समूह को दो गुट में बांटा जाता है तथा इसके बाद वे एक दूसरे पर कोड़े से प्रहार करते हैं। इसे राजस्थान के कई आदिवासी समुदाय खेलते हैं जिसे वे भगोरिया कहते हैं।

इनके अलावा भी राजस्थान में साल भर में अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं जैसे: मकर संक्रांति, महाशिवरात्रि, नागपंचमी, बसंत पंचमी, नवरात्रि, करवा चौथ, इत्यादि। देश की सांस्कृतिक परंपरा से जुड़े ये सभी त्यौहार राजस्थान में बहुत ही उत्साह से मनाए जाते हैं। लेकिन यहाँ इनका स्वरूप कुछ अलग होता है, क्योंकि इन पर राजस्थान की कला एवं संस्कृति की छाप होती है।

रीनु मीना
प्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

पत्थर का मूल्य (कहानी)

बात पुरानी है, लेकिन इतनी भी पुरानी नहीं है। एक युवक था जो यहीं कहीं आसपास ही रहता था। यूं तो वह आम युवकों जैसा ही था, लेकिन एक बात में वह सबसे अलग था। वह हरदम बहुत बेचैन रहता था। मन ही मन एक सवाल से जूझता रहता था। सवाल भी मामूली नहीं। सिद्धार्थ की तरह जीवन–मरण के प्रश्न उसके मन में उठते थे। लेकिन वह सिद्धार्थ जितना बुद्धिमान नहीं था कि उसे अपने–आप ज्ञान प्राप्त हो जाए। इसलिए एक सुबह वह अपने सवाल का जवाब पाने की मंशा से एक बाबाजी के दरबार में पहुंच गया। मौका मिलने पर युवक ने उनसे पूछा कि जीवन का मूल्य क्या है। बाबाजी उसका सवाल सुनकर चौंक उठे। ऐसा सवाल करने वाला इस घोर कलियुग में कहां से आ टपका! यह तो गनीमत हुई कि बाबाजी जरा पहुंचे हुए किस्म के निकले। वरना उस युवक को चेला बनाकर जिन्दगी भर अपनी सेवा कराते रहते। बाबाजी ने उससे कहा, वत्स, जीवन तो बहुत बड़ी चीज है। उसका मूल्य जानने की कोशिश तुम बाद में करना। पहले मूल्य लगाना तो सीख लो! उन्होंने पास में रखे एक पत्थर को उठाया और युवक के हाथ में थमाकर शाम तक उसके मूल्य का पता लगाकर आने को कहा।

पत्थर निहायत ही मामूली था। युवक को शंका हुई कि बाबाजी को उसके सवाल का जवाब नहीं पता होगा इसलिए उन्होंने उससे पीछा छुड़ा लिया है। लेकिन वह थोड़े जिद्दी किस्म का था। उसने सोचा कि कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है। कुछ नहीं तो बाबाजी के पास वापस जाकर बहस करने का मुद्दा ही मिल जाएगा। वह बाजार में घूमने लगा। हर किसी से पूछने लगा कि बताओ इस पत्थर का मूल्य क्या है। लोग उसे सनकी समझकर कतरा कर निकल जाते। कुछ ने उसे घूरकर देखा। कुछ उसपर हँसे। कुछ ने उसकी बुरी तरह हँसी उड़ाई। युवक दो–तीन घंटों तक बर्दाश्त करता हुआ अपना काम करता गया। लेकिन फिर उसे लगा कि वाकई बाबाजी ने उसे उल्लू बनाया है। धूप में घूमते–घूमते उसे थकान भी महसूस होने लगी थी। एक चौराहे पर घनी छांव वाला एक पेड़ देखकर वह सुस्ताने बैठ गया। तभी वहां एक आदमी संतरे से भरा ठेला लेकर आया। उसे वहीं पर अपनी दुकान जमा ली। आने–जाने वाले राहगीर उससे संतरे खरीदने लगे। दोपहर होने को थी। युवक को रसीले संतरे दिखे तो उसे भूख–प्यास दोनों लग आई। उसे याद आया कि उसने सुबह से पानी भी नहीं पिया है। लेकिन उसके पास एक पैसा तक नहीं था कि वह संतरा खरीद लेता। भीख मांगने की उसकी आदत नहीं थी। बहुत देर तक झिझकने के बाद आखिर उसने कुछ निश्चय किया और संतरे वाले से जाकर कहा – भइया, मुझे बड़ी भूख लगी है। लेकिन मेरे पास पैसे नहीं हैं। मेरे पास एक चमत्कारी पत्थर है जिसे मैं हिमालय के तीर्थ से लाया हूं। मजबूरी में तुम्हें दे रहा हूं। इसके बदले तुम मुझे जितने संतरे दे सकते हो, दे दो। संतरे वाला हृदयहीन नहीं था। वह समझ गया कि युवक में भिखारी न होने की आन है इसलिए वह पत्थर की आड़ ले रहा है। उसने उसके हाथ से पत्थर ले लिया और दो संतरे उसे दे दिए। पत्थर को उसने ठेले के नीचे गिरा लिया।

संतरे खाकर युवक की जान में जान आई। तब उसका दिमाग भी चलने लगा। उसे लगा, पत्थर का कोई न कोई मूल्य तो जरूर है। बाबाजी झूठे नहीं हैं। उसे यह जानने की इच्छा हो आई कि संतरे वाले को इस पत्थर का क्या मूल्य हासिल होता है। कुछ ही दूरी पर एक दूसरा पेड़ था। वहां जाकर वह संतरे वाले और उस पत्थर की निगरानी करने लगा। थोड़ी देर में पेड़ से कुछ बंदर नीचे उतरे और संतरे के ठेले पर झपटे। संतरे वाले ने नीचे से पत्थर उठा लिया और उन्हें डराने लगा। दो बंदर जो बाकी बंदरों के मां–बाप लगते थे, अपनी अनुभवी आंखों से संतरे वाले को ताड़ते हुए धीरे–धीरे आगे बढ़े। उन्हें लग रहा था कि संतरे वाला केवल डरा रहा है, वह पत्थर को चलाकर मारेगा नहीं। दूसरे बंदर भी अपने नेताओं के पीछे–पीछे रहते हुए आगे को सरकने लगे। संतरे वाला उनकी चाल ताड़ गया। उसने पत्थर वाला अपना हाथ पीछे खींचा और दोनों नेता बंदरों पर निशाना साधकर पत्थर चला दिया। बंदर भी होशियार थे। कलाबाजियां खाकर बच निकले और नीचे झूल रही डालियां पकड़कर पलक झपकते पेड़ की छतनार पत्तियों के बीच गायब हो गए। उस पत्थर की कीमत पर संतरे वाले ने अपने कई संतरे बचा लिए। फेंके हुए पत्थर पर दुबारा उसका ध्यान नहीं गया। वह अपने ग्राहकों में व्यस्त हो गया। युवक की उस पत्थर में दिलचस्पी और बढ़ गई। उसने उस पर नजर गड़ा दी। कुछ देर बाद एक साधु कुछ ढूंढ़ते–ढूंढ़ते वहां आया। उस पत्थर को देखकर वह ठिठका। इधर–उधर देखते हुए उसने उसे उठा लिया और आगे बढ़ने लगा। युवक साधु के पीछे–पीछे चल पड़ा।

साधु कुछ दूर चलकर एक तीसरे पेड़ के नीचे पहुंचा। उसने वहां अपना आसन जमा लिया। थोड़ी सी मिट्टी खोदकर उसने एक चबूतरा सा बनाया और पत्थर को उसके बीच अटकाकर खड़ा कर दिया। पास के एक चापाकल से पानी लाकर लीप–पोतकर उसने एक पवित्र दिखने वाली जगह बना ली। पत्थर को नहला–धुलाकर उस पर चंदन लेप दिया, गेरुआ थैले से कुछ फूल निकाल कर चढ़ा दिया। फिर उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और माला निकाल कर फेरने लगा। साधु को उपासनारत देखकर लोग वहां रुकने लगे। बगल से गुजर रहे एक फूल वाले ने वहीं अपना ठेला रोक लिया। लोग उससे फूल खरीदकर उस पत्थर पर चढ़ाने लगे। जय बाबा जी की के हुंकारे लगने लगे। लोग पत्थर और साधु को प्रणाम करते, फिर जेब से कुछ पैसे निकालकर पत्थर पर चढ़ा देते। कुछ लोग साधु के पास भी पैसे रख देते। लोग पास की दुकान से मिठाइयां लाकर चढ़ावा चढ़ाने लगे। प्रसाद बांटने लगे। प्रसाद खा–खाकर युवक की भूख भी मिटने लगी। कुछ लोग साधु से अपना हाथ दिखाकर भविष्य पूछने लगे। धूप की गरमी बढ़ी तो लोगों का आना–जाना कम हो गया। जब भीड़ छंट गई तो साधु ने पत्थर के आसपास चढ़ाई गई सामग्री, प्रसाद, रुपये–पैसे बटोरे और चलता बना। पत्थर वहीं पड़ा रहा। युवक भी वहीं डटा रहा।

युवक पत्थर के बढ़े मूल्य का अनुमान लगा ही रहा था कि एक जुलूस वहां से गुजरने लगा। वह एक धार्मिक समुदाय का जुलूस था जिसमें एक अन्य समुदाय के लिए भड़काऊ नारे लगाए जा रहे थे, जिस समुदाय के लोग इस क्षेत्र में रहते थे। देखते-देखते गलियों के मकानों से कुछ लोग निकलकर सड़क पर आए और किनारे खड़े होकर विरोधी नारे लगाने लगे। एक गुस्सैल लड़के ने वही पत्थर उठाकर जुलूस पर दे मारा। पत्थर जुलूस के पिछले भाग में नारे लगाते चल रहे एक अधेड़ के सिर पर पड़ा और वह लहूलुहान होकर वहीं गिर पड़ा। जुलूस आगे बढ़ गया था। घायल अधेड़ के साथ चल रहे साथियों ने उसे उठाया और अस्पताल के लिए दौड़े। पुलिस के आने के डर से जल्द ही भीड़ छँट गई। चुपचाप यह सारा तमाशा देख रहे युवक ने खून से सने उस पत्थर को उठाया और बाबाजी के पास पहुंचा। उसने उन्हें पत्थर की पूरी कहानी बताई और कहा कि मैं समझता था इस पत्थर का कोई मूल्य नहीं होगा। लेकिन इस पत्थर का कुछ न कुछ मूल्य तो जरूर है। वह भी एक सा नहीं रहता, बल्कि बदलता रहता है।

बाबाजी ने उस शिष्य को समझाया – जिस व्यक्ति का जैसा कर्म होता है वह उसी प्रकार से किसी भी वस्तु का उपयोग करता है। तुम भूखे थे इसलिए इस पत्थर के जरिये दो संतरे पाकर तुमने अपनी भूख मिटा ली। संतरे वाले का कर्म संतरे बेचकर लाभ कमाना था इसलिए उसने पत्थर से बंदरों को भगाकर अपने कई संतरे बचा लिए और इस तरह थोड़ा लाभ कमा लिया। साधु अपना जीवन चलाने के लिए ईश्वर और उसके भक्तों पर आश्रित रहता है, इसलिए उसने उस पत्थर को भगवान की मूर्ति बनाकर चढ़ावे से अपने एक दिन के राशन के बराबर सामग्री प्राप्त कर ली। इसी तरह झगड़ालू लोगों ने उस पत्थर को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करके विरोधी को परास्त कर दिया। जिसकी जितनी जरूरत थी, उसने उस पत्थर से उतना ही मूल्य प्राप्त कर लिया। तुम भी इसी पत्थर की तरह अमूल्य हो। जिसके संपर्क में आओगे, जिन परिस्थितियों में पड़ोगे, उसी के अनुरूप तुम्हारे जीवन का मूल्य भी बदलता जाएगा। उस पत्थर और तुममें बस इतना अंतर है कि तुम सजीव मनुष्य हो। अपनी बुद्धि से ज्ञान प्राप्त करके अपने मूल्य में वृद्धि कर सकते हो। युवक बाबाजी के सामने नतमस्तक हो गया। उसे अपने सवाल का जवाब मिल गया था।

मयूरी त्यागी
प्रबंधक
यूको बैंक
जयपुर

पराया धन

जब-जब भी मैं रोती थी, बाबा डर जाते थे।
दौड़ कर आते थे, मुझ पर बड़ा चिल्लाते थे।
उठ न पगली, किसी दिन ज़ोर से गिर जाएगी।
खुद भी रोएगी और मुझे भी रुलाएगी।
और मैं दौड़ कर जाती थी, उनसे जाके लिपट जाती थी।
उनके कंधे पर आँसू पोंछकर, धीरे से मुस्काती थी।
आज सिर पकड़ कर बैठे हैं बाबा, कंधे से नहीं लगते हैं।
मेरे शव के सामने मेरे बाबा, फफक-फफक कर रो पड़ते हैं।
कितनी बार कहा था मैंने, पैसे नहीं पुलिस ले कर आओ बाबा,
जिसे पराया किया है ब्याह के, उस धन को ले जाओ बाबा।
बेबस बाबा जात-पात के बोझ तले, मुझसे यही कह जाते थे।
सब्र कर बेटी, सब सही हो जाएगा, पीठ दिखाकर आँसू मुझसे छिपा जाते थे।
छाती पीट-पीट कर रोती माँ, ढाढ़स मुझे बँधाती थी।
थोड़ा सह ले बेटी, घर है वो तेरा, कहकर फोन रख देती थी।
जिस बाबा ने राजकुमारी की तरह मुझे पाला था।
उसी परी का शरीर, मार-मार कर नीला ज़ालिमों ने कर डाला था।
सोने से लादकर भेजा था बाबा ने, जमीन तक गिरवी रख दी थी।
उसी रूपवन्ती बेटी की देह, जलाकर कोयले जेसी काली कर दी थी।
ऐसा जलाया है बाबा मुझे, चिता की भी नहीं जरूरत पड़ी।
क्यू नहीं बताया किसी ने, बेटी पैदा होते ही पराया धन ही रही।
पराया धन ही रही.....*****

सोनिया सेन
केनरा बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय-2
जयपुर

रामचरितमानस में नवधा भक्ति

गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी कालजयी रचना श्री रामचरित मानस के अरण्यकांड में नवधा भक्ति के विषय में जानकारी दी है। वनवास के दौरान, भगवान श्रीराम अपने भ्राता लक्ष्मणजी के साथ शबरी के आश्रम में पहुंचते हैं, तो भावविभोर शबरीजी उनका स्वागत करती हैं, उनके चरणों को पखारती हैं और उन्हें रसभरे कन्द-मूल-फल लाकर अर्पित करती हैं। प्रभु बार-बार उन फलों के स्वाद की सराहना करते हुए आनन्दपूर्वक उनका आस्वादन करते हैं। इसी समय प्रभु श्रीराम शबरीजी के समक्ष नवधा भक्ति का वर्णन इस प्रकार करते हैं :-

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा ।
दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ।।

भक्ति का प्रथम माध्यम संतों का सत्संग है और दूसरा मेरे कथा प्रसंग में प्रेम है। अर्थात् सज्जनों के संपर्क में रहना और प्रभु की कथा से मिलने वाली शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान ।
चौथि भगति मम गुनगान करई कपट तजि आन ।।

अभिमान रहित होकर गुरु के चरणकमलों की सेवा तीसरी भक्ति है। कपट त्यागकर मेरे गुणसमूहों का गान करना भक्ति का चौथा प्रकार है।

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा ।
पंचम भजन सो बेद प्रकासा ।।

मेरे मंत्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास, यह वेदों में प्रसिद्ध पांचवीं भक्ति है।

छठ दम सील बिरति बहु करमा।
निरत निरंतर सज्जन धरमा ।।

इंद्रियों का निग्रह, अच्छा स्वभाव, बहुत कार्यों से वैराग्य एवं सदैव सज्जनों के समान आचरण करना भक्ति का छठा प्रकार है।

सातवँ सम मोहिमय जग देखा ।
मोतें संत अधिक करि लेखा ।।

संपूर्ण संसार को समभाव से प्रभु से ओतप्रोत देखना और संतों को मुझसे भी अधिक मानना सातवीं तरह की भक्ति है। अर्थात् सज्जनों का आदर करना चाहिए और संपूर्ण जगत में भगवान की उपस्थिति को महसूस करना चाहिए।

आठवँ जथालाभ संतोषा ।
सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा ।।

जो कुछ मिल जाए उसमें संतोष करना तथा स्वप्न में भी दूसरे के दोषों का विचार न करना भक्ति का आठवाँ प्रकार है।

नवम सरल सब सन छलहीना ।
मम भरोस हिय हरष न दीना ।।

भक्ति का नवाँ प्रकार सरलता और सबके साथ कपटरहित व्यवहार करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना व किसी भी अवस्था में हर्ष व विषाद का न होना है ।

इन नौ तरह की भक्ति में वर्णित गुणों को जीवन में अधिकाधिक अपनाने से जीवन सुख शांतिमय रूप से व्यतीत हो सकता है।

****

वेद मखीजा
सिडबी
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

राजभाषा अनुपालन में सहायक भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की वेबसाइट

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा स्वीकार किया गया और उसके निरंतर प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी अनुच्छेद 351 के तहत संघ सरकार एवं उसके कार्यालयों को सौंपी गई। सरकारी क्षेत्र के बैंक भी इनमें शामिल हैं। सभी विभागों के बीच समन्वय का उत्तरदायित्व निभाने के लिए केन्द्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत 1955 से एक स्वतंत्र राजभाषा विभाग कार्यरत है। इसके लिए विभाग ने देश भर में 8 क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों तथा उनके अधीन सैकड़ों नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया है। एक निश्चित लक्ष्य लेकर उसे प्राप्त करने का प्रयास किया जाए तो गति में शिथिलता नहीं आएगी, इसी दृष्टि से विभाग द्वारा प्रतिवर्ष अप्रैल माह में हिंदी के प्रगामी प्रयोग में वृद्धि के लिए एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। यह कार्यक्रम विभाग की वेबसाइट rajbhasha.gov.in अथवा rajbhasha.nic.in पर उपलब्ध कराया जाता है, जहाँ से उसे कोई भी डाउनलोड कर सकता है। सभी बैंकों के राजभाषा अधिकारी उसे डाउनलोड करके अपनी शाखाओं एवं अधीनस्थ कार्यालयों को उपलब्ध कराते हैं। अनेक वर्षों से अधिकांश मदों के लक्ष्य अधिकतम प्रतिशत सीमा तक पहुँच चुके हैं और अब लगभग अपरिवर्तित रहते हैं। जयपुर एक हिंदी भाषी क्षेत्र है और हिंदी भाषी क्षेत्र से खास तौर पर अपेक्षा की जाती है कि जिन मदों में लक्ष्य शत-प्रतिशत से कम है, उनमें भी संपूर्ण कामकाज हिंदी में ही करने का प्रयास किया जाए। नराकास पुरस्कार एवं अन्य पुरस्कार प्राप्त करने की दृष्टि से भी यह जरूरी है।

समन्वयक होने के नाते राजभाषा विभाग की उक्त वेबसाइट को सभी आवश्यक जानकारियों से युक्त बनाया गया है। इस वेबसाइट पर वार्षिक कार्यक्रम के अलावा विविध प्रकार की सामग्री उपलब्ध है, जो केवल राजभाषा अधिकारियों के लिए ही नहीं, बल्कि हिंदी में काम करने वाले किसी भी कार्मिक के लिए अत्यंत उपयोगी है। आइए, ऐसी कुछ सामग्री से आपका परिचय कराते हैं।

1) राजभाषा विभाग, इसके अधिकारियों के नाम एवं संपर्क विवरण, विभाग के कार्य, परिपत्र, ई-पुस्तिकाएँ, उपलब्धियाँ आदि
2) केन्द्रीय हिंदी संस्थान एवं उसके प्रशिक्षण कार्यक्रमों से संबंधित जानकारियाँ
3) लीला हिंदी प्रवाह : विभिन्न भारतीय भाषाभाषियों को अलग-अलग स्तर की हिंदी सिखाने के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रम
4) लीला हिंदी स्वयं शिक्षण : प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ स्तर की हिंदी सीखने के लिए ऑनलाइन स्वयं शिक्षण लीला पाठ्यक्रम
5) कंठस्थ : हिंदी एवं अंग्रेजी के बीच अनुवाद करने और भविष्य में उसका उपयोग करने पर आधारित प्रणाली
6) मशीन अनुवाद : हिंदी एवं अंग्रेजी के बीच अनुवाद करने के लिए मंत्र राजभाषा प्रणाली
7) श्रुतलेखन : हिंदी बोलकर हिंदी में टंकण करने में सक्षम स्वचालित प्रणाली
8) प्रवाचक : हिंदी में लिखी सामग्री को बोलकर सुनाने में सक्षम स्वचालित प्रणाली
9) ई-महाशब्दकोश : हिंदी से अंग्रेजी एवं अंग्रेजी से हिंदी के शब्दों के लिए एक आदर्श ऑनलाइन शब्दकोश
10) राजभाषा कीर्ति पुरस्कार एवं राजभाषा गौरव पुरस्कार से संबंधित सभी जानकारियाँ तथा प्रारूप
11) हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं शब्द पहेली : यह मनोरंजक, ज्ञानवर्धक एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित करने में भी सहायक है।
12) लघु कहानियाँ : इसके तहत प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकारों की छोटी कहानियाँ उपलब्ध कराई गई हैं।
13) ई-पत्रिका पुस्तकालय : इसमें सभी विभागों/उपक्रमों/बैंकों द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिकाएँ उपलब्ध कराई गई हैं।
14) ई-सरल हिंदी वाक्य कोश : इसके तहत बहु-उपयोगी वाक्यों के हिंदी एवं अंग्रेजी रूप उपलब्ध कराए गए हैं।
15) सू.प्र प्रणाली : कार्यालय की तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु ऑनलाइन प्रणाली

इन सबके अलावा, देश भर के नराकास की सूची एवं संपर्क विवरण भी हैं। राजभाषा विभाग की यह वेबसाइट हम सबके लिए ही बनाई गई है। इसे एक बार खोलकर देखें, फिर बार-बार इसकी मदद से अपने हिंदी कामकाज और ज्ञान को बेहतर बनाएँ।

• संपादकीय प्रस्तुति

क्या आप जानते हैं? संस्कृत के प्राचीन एवं लोकप्रिय भाषा रूप को यूरोपीय भाषा विज्ञानियों ने आदि भाषा के रूप में मान्यता दी है। उनका मानना है कि उसी से अंग्रेजी सहित सभी यूरोपियन भाषाओं का विकास हुआ है। इसी कारण से संस्कृत एवं हिंदी सहित अधिकांश भारतीय भाषाओं और यूरोपियन भाषाओं के शब्दों में बहुत अधिक समानताएँ देखी गईं। इन्हीं समानताओं के कारण है कि दुनिया की सभी भाषाओं को वर्गों में विभाजित करते समय भाषा विज्ञानियों ने भारत एवं यूरोपियन भाषाओं को एक ही वर्ग में रखना पड़ा, जिसे भारोपीय (इंडो-यूरोपियन) भाषा परिवार कहते हैं। जर्मन भाषा विज्ञानी ग्रिम ने तो इसे सिद्ध करने के लिए एक नियम भी बनाया था जिसे ग्रिम नियम के रूप में जाना जाता है। ग्रिम ने अपने नियम के संक्षिप्त रूप को एक तालिका के माध्यम से भी प्रस्तुत किया है, जिसकी मदद से आसानी से यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार कोई संस्कृत शब्द हजारों वर्षों में उच्चारण भिन्नता के कारण परिवर्तित होकर यूरोपियन भाषा का शब्द बन गया है। ग्रिम ने अपने शोध-ग्रंथ में सैकड़ों संस्कृत शब्दों को ग्रीक, लैटिन, अंग्रेजी, फ्रैंच, इतालियन, जर्मन, रशियन आदि भाषाओं के शब्दों में परिवर्तित करके अपने नियम को सही साबित किया था। आइए, हम संस्कृत शब्दों से अंग्रेजी शब्दों के विकास से संबंधित कुछ उदाहरणों के जरिये इस सच्चाई को परखने का प्रयास करते हैं :-

भारोपीय भाषा परिवार (भारत + यूरोप की भाषाओं का परिवार) की भाषाओं के विकास में					
भाषायी परिवर्तन संबंधी ग्रिम नियम					
वैदिक संस्कृत			अंग्रेजी		
ग	द	ब	क	त	प
क	त	प	ख/ह	थ	फ
ख/ह	थ	फ	ग	द	ब

उदाहरण - 1 : मातृ → वैदिक संस्कृत का म और र अंग्रेजी में नहीं बदलता। त बदलता है और अंग्रेजी भाषा के क्षेत्र में जाकर उच्चारण भिन्नता के कारण थ में परिवर्तित हो जाता है। माता के लिए अंग्रेजी शब्द है Mother जिसका प्राचीन उच्चारण मथर ही था। बाद में कुछ हजार वर्षों में अंग्रेजी भाषा के क्षेत्रों में लोगों के उच्चारण में परिवर्तन आया और वे थ का उच्चारण द की तरह से करने लगे। ऊपर की तालिका में दोनों तालिकाओं के अक्षरों का मिलान करें तो त को थ में और थ को द में बदलने का नियम स्पष्ट है। तो इस प्रकार, संस्कृत का मातृ शब्द बहुत थोड़े परिवर्तन के साथ अंग्रेजी भाषा क्षेत्र में मदर के रूप में व्यवहार किया जाने लगा।

परिवर्तन स्वर में भी होता है, यहाँ मातृ का आ बदलकर अॅ और ऋ बदलकर र हो गया है, लेकिन इसके लिए अलग से नियम बनाने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि इस परिवर्तन को तत्काल उच्चारण भिन्नता के रूप में महसूस किया जा सकता है। व्यंजनों का परिवर्तन लंबी अवधि में होता है और इसके बाद वही शब्द बिल्कुल अलग सा लगने लगता है, इसलिए अधिक महत्वपूर्ण होता है।

उदाहरण - 2 : पितृ → पिता के लिए अंग्रेजी शब्द है Father जिसमें तालिका के अनुसार प बदलकर फ हो गया है। ऊपर के उदाहरण के अनुसार त बदलकर द हो गया है। इस प्रकार पितृ शब्द अंग्रेजी में जाकर फादर हो गया है।

उदाहरण -3 : गौ → इसके लिए अंग्रेजी शब्द है Cow, जिसमें केवल ग ऊपर की तालिका के अनुसार क में बदल गया है।

प्रासंगिकता : आप सोच रहे होंगे कि इस ऐतिहासिक ज्ञान का राजभाषा के प्रचार-प्रसार से क्या संबंध है। दुनिया को शब्द और भाषा सिखाने वाला भारत प्राचीन युग में विश्व-गुरू था। इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। जो देश विश्व का नेतृत्व करता है वह अपनी भाषा में मौलिक ज्ञान-विज्ञान का विकास करता है। अन्य देश उसकी भाषा सीखने को बाध्य होते हैं। पूरी दुनिया से धन उसकी ओर खिंचा चला आता है, इसलिए वह सबसे ज्यादा समृद्ध भी होता है। जब हमने अपनी भाषा छोड़कर अंग्रेजी को अपना लिया, तो हमारी जगह पहले ब्रिटेन और बाद में अमेरिका ने विश्व का नेतृत्व किया और दुनिया के सबसे समृद्ध राष्ट्र बने। हम अगर अपने देश को खोया हुआ सम्मान और सोने की चिड़िया वाली समृद्धि वापस दिलाना चाहते हैं तो हमें अपनी आज की भारतीय भाषाओं और हिंदी को पूरी तरह से अपनाना होगा। भारतीय भाषाएँ हर तरह से अंग्रेजी से अधिक शक्तिशाली और सक्षम हैं, यह इतिहास से सिद्ध है। इसी दृष्टि से हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने हमारे संविधान में स्पष्ट रूप से प्रावधान किए हैं कि अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग बढ़ाया जाए। हमें तो बस संविधान का पालन करना है।

• संपादकीय प्रस्तुति

कृषि बैंकिंग का बदलता स्वरूप

राष्ट्रीयकरण के बाद भारतीय बैंकिंग ग्रामीण विकास का एक ऐसा माध्यम बनी जो त्वरित आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनुकूल वातावरण के निर्माण में सहायक हुई। इस काल में भारतीय बैंकिंग के स्वरूप में किए गए परिवर्तनों के कारण सामाजिक प्रतिबद्धता के व्यापक प्रारूप में जहां एक ओर कृषि एवं ग्रामोद्योग क्षेत्र को बढ़ावा दिया गया और उन्हें वित्तीय सहायता देने के लिए नई योजनाएँ लागू की गईं, वहीं दूसरी ओर गरीबी उन्मूलन एवं रोजगार सृजन कार्यक्रमों के अंतर्गत छोटे उद्यमियों को विकसित होने के अवसर प्रदान किए गए। ग्रामीण क्षेत्रों में वाणिज्यिक बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों एवं सहकारी बैंकिंग के विस्तार एवं समेकन के अतिरिक्त राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण बैंक की स्थापना के दो दशकों के बाद प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को एक यथार्थवादी स्वरूप प्रदान किया गया। ग्रामीण ऋणों में बैंकों की सहभागिता एवं संलग्नता के कारण कृषि क्षेत्र में भी ऐसी नवोन्मेषी योजनाएँ उभरीं जो परंपरागत स्वरूप से काफी भिन्न हैं तथा उन्हें बैंक वित्त से संपोषित किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने इसमें नए आयाम जोड़ दिए हैं।

विगत कई दशकों से ग्रामीण विकास को विकास योजनाओं में प्रमुखता दी गई है। ग्रामीण ऋण के क्षेत्र में संस्थागत स्वरूप का विस्तार करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस प्रयास में ग्रामीण ऋण वितरित करने का एक बहुएजेंसी दृष्टिकोण विकसित किया गया है और इन प्रयासों के फल भी उत्साहवर्धक रहे हैं। फिर भी, संस्थागत विकास और संरचना आधार के विस्तार, दोनों की दृष्टि से व्यापक ध्यान देने पर भी ग्रामीण ऋण प्रणाली में कई कमियाँ रह गई हैं। देश में जारी सुधार प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण ऋण पर पुनर्विचार करने और इसमें निहित कमजोरियों को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं। अतः इस बात पर बल देने की आवश्यकता है कि ग्रामीण ऋण के व्यापक प्रारूप में कृषि एवं कृषितर कार्यों के लिए उत्तरोत्तर ऋण प्रवाह होता रहे। भारत सरकार ने भी बैंकों से तीन वर्षों में कृषि ऋण प्रवाह को दुगुना करने के नीतिगत पैकेज को क्रियान्वित करने का निर्देश दिया है जिसके अंतर्गत प्रति वर्ष कृषि ऋण में न्यूनतम 30 प्रतिशत की वृद्धि करनी है।

किसान को समय पर और पर्याप्त मात्रा में ऋण उपलब्ध कराने की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी सरकारी क्षेत्र के बैंकों की है जिसे सही अर्थों में क्रियान्वित करने की दिशा में बैंकों को मार्गदर्शन प्रदान करने में नाबार्ड सक्रिय और उत्प्रेरक भूमिका अदा करता रहा है। इसके लिए नाबार्ड ने कई नवोन्मेषी कार्यनीतियाँ तैयार की हैं। किसान क्रेडिट कार्ड इनमें से एक ऐसा उत्पाद है जिसे कृषि ऋण के उपयोग में अधिक लचीलापन लाने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। यह योजना नाबार्ड द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक तथा अन्य बैंकों के परामर्श के पश्चात 1998-99 में तैयार की गई थी।

किसान क्रेडिट कार्ड की मॉडल योजना को सभी बैंक देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कार्यान्वित कर रहे हैं। जब ग्रामीण स्वयं सहायता समूहों में संगठित होकर छोटी-छोटी बचतों और ऋणों का प्रबंध करते हैं तो न केवल बैंकिंग प्रणाली का अभिन्न अंग बन जाते हैं, बल्कि वे उस सामाजिक-आर्थिक अन्याय का सामना करने के लिए आंतरिक रूप से सक्षम भी हो जाते हैं जिससे वे कई दशकों से त्रस्त रहे हैं। विभिन्न बैंकों/बैंक शाखाओं द्वारा उनके स्वयं के प्रयासों अथवा इस क्षेत्र में कार्यरत गैर सरकारी संस्थाओं की सहायता से स्वयं सहायता समूहों को लघु बैंकों की तरह काम करने में सक्षम बनाना आज की जरूरत है। ग्रामीण विकास के संदर्भ में बैंकिंग क्षेत्र में हाल ही में कुछ नई परंपराएँ देखने में आई हैं। प्राकृतिक विपदाओं के प्रबंधन में बैंकों की भूमिका स्वाभाविक एवं स्फूर्तिदायक हुई है। सूखे के समय बैंकों द्वारा अल्पकालीन ऋणों को मध्यकालीन ऋणों में परिवर्तित कर दिया जाता है तथा नए अल्पकालीन ऋण प्रदान किए जाते हैं।

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण बैंक, सरकारी क्षेत्र के बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक आदि संस्थाओं द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, विशेषकर कमजोर वर्गों को ऋण देने के लिए लक्ष्य निर्धारित करने से तथा किसान क्रेडिट कार्ड, स्वयं सहायता समूह, बैंकों के प्राकृतिक विपदा प्रबंधन आदि नवोन्मेषी उपायों को अपनाने से ग्रामीण क्षेत्र में क्रियान्वित किए जाने वाले गरीबी उन्मूलन जैसे कार्यक्रम अधिक प्रभावी हुए हैं। एग्री बिजनेस एवं एग्री क्लीनिक, औषधीय पौधों का उत्पादन, ग्रामीण भंडारण, ग्रामीण विपणन, लघु सिंचाई के अंतर्गत फव्वारा सिंचाई, बूंद-बूंद सिंचाई, फार्म पॉण्ड, वाटर शेड कार्यक्रम, आदि को ऋण सहायता सुनिश्चित करने से कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र के औद्योगीकरण को बल मिला है।

कृषि बैंकिंग का बदलते स्वरूप को उदाहरण के रूप में बताया जाए तो जयपुर जिले के बसेड़ी गाँव को लिया जा सकता है। कहते हैं न, मन में अगर ज़ज्बा और जुनून हो तो कुछ भी असंभव नहीं होता। यह वाक्य जयपुर के एक छोटे से गाँव बसेड़ी के किसानों ने कर दिखाया है। बसेड़ी एक ऐसा गांव है जहां के किसान अभी तक कृषि के नए एवं वैज्ञानिक तकनीकों से अछूते थे। किसान परिवारों की आय का एकमात्र स्रोत कृषि था। वे गेहूँ, बाजरा आदि का उत्पादन किया करते थे। परंतु स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। आमदनी से गुजारा करना मुश्किल होता जा रहा था। ऐसे में कुछ लोगों ने उच्च तकनीक से खेती करना शुरू किया। वे नेशनल हॉर्टीकल्चर मिशन के माध्यम से इंवेस्टमेंट क्रेडिट योजना के तहत सब्जियों के उत्पादन के लिए पॉलीहाउस का प्रयोग करने लगे।

पॉलीघर या पॉलीहाउस पॉलीथीन से बना एक रक्षात्मक छायाप्रद घर है, जिसका उपयोग उच्च मूल्य वाले कृषि उत्पादों को उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। यह अर्धवृत्ताकार, वर्गाकार या लम्बे आकार का होता है। इसमें लगे उपकरणों की सहायता से इसके अन्दर का ताप,आर्द्रता, प्रकाश आदि को नियंत्रित किया जाता है। पॉली हाउस तकनीक का उपयोग संरक्षित खेती के तहत किया गया है। इस तकनीक से जलवायु को नियंत्रित कर, प्रतिकूल मौसम में भी खेती की जा सकती है। ड्रिप पद्धति से सिंचाई कर तापमान व आर्द्रता को नियंत्रित किया जाता है। इस तरह जब चाहें तब मनपसंद फसल उगा सकते हैं।

यही वह समय था जब बसेड़ी ग्रामवासियों की किस्मत ने नया मोड़ लिया और बैंक की सहायता एवं कड़ी मेहनत ने बंजर हो रही जमीन को हरियाली में बदल दिया। इस नई तरह की खेती की सफलता को देखकर सम्पूर्ण ग्रामवासी कृषि के नए-नए तकनीकों का प्रयोग करके उत्पादन बढ़ाने के लिए जागरूक हुए। वर्ष 2014 में एक किसान कान्हाराम यादव ने 62 टन प्रति हेक्टेयर खीरा उत्पादन का रिकार्ड बनाया। कृषि वैज्ञानिकों से पता चला कि अब तक इससे अधिक उत्पादन कोई किसान नहीं कर पाया था। इससे पहले 50-55 टन प्रति हेक्टेयर खीरा उत्पादन का रिकार्ड था, लेकिन कान्हाराम ने खीरा उत्पादन में जिले में एक नया रिकार्ड कायम कर इतिहास रच दिया। यह उदाहरण बसेड़ी गाँव की मेहनत और हौसले का ही नतीजा है।

सोच से संभावनाओं और संभावनाओं से सफलता तक का सफर हौसलों से होकर गुजरता है।

ऐसे उदाहरण और भी हैं। ऐसे उदाहरणों से पता चलता है कि इधर कुछ दशकों में भारत की कृषि बैंकिंग का स्वरूप पूरी तरह से बदल गया है। हाल के वर्षों में इस प्रक्रिया में और भी तेजी आई है। भारत सरकार द्वारा कई अभियान भी चलाये गए हैं। इन अभियानों को वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने के उद्देश्य के तहत चलाया जा रहा है, जिसकी घोषणा प्रधान मंत्री द्वारा बार-बार की गई है। इसमें प्रमुख भूमिका सरकारी क्षेत्र के बैंक निभा रहे हैं, जो स्वाभाविक ही है। उम्मीद है कि यह उद्देश्य पूरा होगा और भविष्य में भी समन्वित विकास की इस प्रक्रिया को जारी रखते हुए किसानों को इतना समृद्ध किया जा सकेगा, जिससे भारतीय परंपरा द्वारा दिया गया उनका अन्नदाता नाम सार्थक हो जाए।

वीरेन्द्र यादव
वरिष्ठ प्रबंधक
बैंक ऑफ बड़ौदा
अंचल कार्यालय, जयपुर

ख़्वाब में जिंदगी

आज फिर जिंदगी को ख्वाब में ही देखा है
खुली आँख तो वो नज़र नहीं आती

बहुत तारीफें सुनी हैं उसकी
पर वो कहीं नज़र नहीं आती

हर जगह तलाशा उसे
पर वो कहीं नज़र नहीं आती

हम भागते हैं उसके लिए
पर वो कहीं नज़र नहीं आती

हम ढूँढ़ते हैं उसे
पर वो कहीं नज़र नहीं आती

कभी मिलेगी तो पूछेंगे उससे
कहाँ रहती हो तुम

हर कोई ढूँढ़ता है तुम्हें
किसके पास रहती हो तुम

आज फिर जिंदगी को ख्वाब में ही देखा है
खुली आँख तो वो नज़र नहीं आती

***

आधी-अधूरी जिंदगी

कभी न मिली जिंदगी फिर भी जी रहे हैं हम
आधी-अधूरी जिंदगी जी रहे हैं हम

कभी प्यार को तरसते जी रहे हैं हम
कभी लगाव को तरसते जी रहे हैं हम
आधी-अधूरी जिंदगी जी रहे हैं हम

कभी खुद को सम्हालते हुए जी रहे हैं हम
कभी दूसरों को सम्हालते हुए जी रहे हैं हम
आधी-अधूरी जिंदगी जी रहे हैं हम

कभी इस आस में जी रहे हैं हम
कभी उस आस में जी रहे हैं हम
आधी-अधूरी जिंदगी जी रहे हैं हम

बस खुली आँख ख्वाब देखते हुए जी रहे हैं हम
आधी-अधूरी जिंदगी जी रहे हैं हम

कभी न मिली जिंदगी फिर भी जी रहे हैं हम
आधी-अधूरी जिंदगी जी रहे हैं हम

***

देवेंद्र कुमार महाजन
अंचल प्रबंधक
बैंक ऑफ महाराष्ट्र
अंचल कार्यालय, जयपुर

मेरा सफर...

परिचय : विगत दो दशक से हिंदी पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय। राजस्थान पत्रिका समूह में एक दशक का अनुभव। इसी के साथ हिंदी साहित्य से गहरा जुड़ाव। पहला ही उपन्यास भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन प्रतियोगिता के लिए अनुशंसित हुआ। इसी वर्ष प्रथम शाकुंतलम सम्मान भी मिला, साहित्य में विशेष उपलब्धि के लिए। पत्रकारिता और साहित्य के जरिए संवेदनशील मुद्दों पर बेबाकी से अपनी बात रखने की कोशिश निरंतर जारी।

उमा को बैंक नगर राजभाषा कार्यानवयन समिति, जयपुर द्वारा चन्दबरदाई भाषा सम्मान 2019 से सम्मानित किया गया है।

आपके लिए उमा से बातचीत की है संध्या चौधरी (उप महाप्रबंधक, नाबार्ड) ने।

''यही कोशिश है कि लेखन में नए प्रयोग करूं, ताकि मेरे लिखे में लोग अपने सवालों के जवाब ढूंढ़ सकें''– उमा

प्रश्न : लिखना आपका शौक है या पेशा? इस क्षेत्र में क्यों और कैसे आना हुआ?

उत्तर : स्कूल के दिनों में अंकों से मुझे ज्यादा प्यार रहा, भाषाओं पर पकड़ तब ढीली ही रही। सिर्फ और सिर्फ गणित के सवालों को हल करते जाना पसंद रहा। बड़े होकर समझ आया कि उलझे हुए सवाल सिर्फ गणित की किताबों में ही नहीं होते, जिंदगी में भी होते हैं, जिन्हें सुलझाए बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता, जिंदगी के इन्हीं सवालों को सुलझाते हुए जो लिखती हूं, वो कभी कविता के रूप में दर्ज होता है, तो कभी कहानी, कभी उपन्यास और कभी लेख के रूप में। अखबार में हूं तो लेख ही सबसे ज्यादा लिखे हैं, यूं भी कह सकती हूं कि लेखन की शुरुआत तो अखबार के लिए फीचर लिखने से ही हुई।

प्रश्न : पत्रकारिता से साहित्य का सफर कैसे तय किया?

उत्तर : अखबार में होने का एक फायदा यह भी हुआ कि भाषा पर पकड़ मजबूत हुई, फीचर डेस्क पर ही ज्यादा काम किया है, ऐसे में किताबों से भी गहरा नाता जुड़ा। बचपन में गंभीर साहित्य पढने का कोई मौका नहीं मिला था। परिवार में पढ़ाई–लिखाई का कोई माहौल नहीं था। पिता सुनार थे, गहने गढ़ने का काम करते थे। मां भी उनकी मदद किया करती थीं, दोनों कोशिश तो करते कि जितना उन्हें आता है, पढ़ा सकें, पर क्या करना है पढ़कर, ये उन्हें नहीं पता था। पर ये क्या कम है कि उन्होंने कलम मेरे हाथ में थमाई। वे जानते थे, भरोसा देती है कलम। इसी भरोसे के सहारे हिंदी पत्रकारिता का करीब दो दशक लंबा सफर तय कर लिया है। हिंदी साहित्य से जुड़ाव का भी एक दशक पूरा होने का आया।

प्रश्न : क्या अपने अब तक के सफर से संतुष्ट हैं? या ये सोचती हैं कि आगे अभी बहुत कुछ करना बाकी है?

उत्तर : कुछ वर्ष स्वतंत्र पत्रकार के रूप में बिताए, फिर राजस्थान पत्रिका समूह से जुड़ाव हुआ। राजस्थान पत्रिका (पावर्ड बाय डेली न्यूज) की प्रतिष्ठित मैगजीन 'खुशबू' और 'हम लोग' की प्रभारी हूं। इसी के साथ साहित्यिक पत्रिका 'कुरजां' और 'कलमकार मंच' के संपादन से भी जुड़ी हुई हूं। कई कहानियां हिंदी की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका, परिकथा, पाखी, कथा, जनपथ, नया ज्ञानोदय, कथादेश आदि में छप चुकी हैं। पहला उपन्यास 'जन्नत जाविदां' भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन प्रतियोगिता के लिए अनुशंसित हुआ। इस उपलब्धि ने हिंदी साहित्य में स्थापित किया। उसके बाद कलमकार मंच से भी एक किताब आई, 'किस्सागोई: अदीबों के निज की जादुई कथाएं', जो अपनी खास शैली के लिए खूब सराही गई। यही कोशिश है कि लेखन में नए प्रयोग करूं, लेकिन भाषा की शुद्धता और कंटेंट पर ध्यान देते हुए, ताकि मेरे लिखे में लोग अपने सवालों के जवाब ढूंढ़ सकें।

ऐसे ही लिखती रहूँगी

परिचय : राजस्थान पत्रिका की युवा पत्रकार तस्नीम को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर द्वारा युवा श्रेणी में चन्दबरदाई भाषा सम्मान 2019 से सम्मानित किया गया है। तस्नीम हिंदी में लिखती हैं।

आपके लिए तस्नीम से बातचीत की है संध्या चौधरी (उप महाप्रबंधक, नाबार्ड) ने।

अपने इस लेखन से समाज को कुछ अच्छा दे पाऊँ या इसमें रत्ती भर भी बदलाव कर सकूँ तो जीवन का उद्देश्य पूरा समझूँगी – तस्नीम खान

प्रश्न : सुनते हैं लड़कियों को यहाँ अपनी जिंदगी खुद बनाने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। आपके अनुभव कैसे रहे?

उत्तर : पढ़ने के लिए, सपने देखने के लिए, आगे बढ़ने में मुझे दिक्कतें तो आई, लेकिन वहां पापा–अम्मी थे तो वे इन मुश्किलों से खुद ही निपट लेते। यहां यह जरूर कहना चाहूंगी की मां पढ़ी–लिखी हो तो इसका आपकी जिंदगी पर व्यापक असर होता है। मेरे साथ की कई लड़कियां बस इसीलिए नहीं पढ़ पाईं कि उनके अभिभावकों को पढ़ाई का महत्व पता ही नहीं था। कई बार ऐसी बातों से कदम पीछे खींच लेने का मन भी होता, लेकिन भाई–बहनों ने पीछे नहीं हटने दिया।

प्रश्न : हिंदी से आपका रिश्ता– किस तरह बना?

उत्तर : हिंदी मेरी भाषा है और इस भाषा में मुझे साहित्य के क्षेत्र में बहुत कुछ दिया है। यही बोलती हूं, यही लिखती हूं और सोचती भी इसी में हूं। मैं खुद ही हिंदी हो चुकी हूं।

प्रश्न : साहित्य से जुड़ाव कैसे हुआ और फिर पाठक से लेखक की यात्रा आप कैसे तय कर पाईं।

उत्तर : मैंने साहित्य को चुना नहीं, वो तो मेरे जीवन में शुरू से ही था। किताबों के आसपास जब बचपन बीते तो समझो कि दुनिया कुछ अलग ही होगी। वाकई आज मेरी अलग दुनिया है, जहां मैं किसी भी किरदार से अचानक जुड़ जाती हूं, उसकी बातें करती हूं, उसका दर्द साझा करती हूं और फिर कागजों पर लिख देती हूं। वो कहानी या उपन्यास के रूप में आपके सामने होता है। अब तक 15 से ज्यादा कहानियां लिख चुकी हूं। एक उपन्यास आ चुका है। एक कहानी संग्रह आ चुका है। आगे भी कई सारे किरदार रचने हैं।

प्रश्न : पहले साहित्य लिखने और फिर उसे किताब के रूप में प्रकाशित देखने का अनुभव भी आपने हासिल किया है। किताब छपवाने की इच्छा और किताब छपने की प्रक्रिया क्या लेखक या उसके लेखन में कोई बदलाव लाती है?

उत्तर : मेरा पहला उपन्यास 'ऐ मेरे रहनुमा' भारतीय ज्ञानपीठ से अनुशंसित और प्रकाशित हुआ। यह मेरे लिए किसी आश्चर्य की तरह था। इससे पहले मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि मैं किताब के रूप में कुछ लिख पाऊंगी या जो लिखूँगी वो इतना पसंद किया जाएगा। लिखते हुए तो आज भी किसी की पसंद का नहीं सोचती। जो मुझे ठीक लगता है, वही लिखती हूँ।

प्रश्न : लिखना आपके लिए कितना जरूरी है? क्या यह आपके मन की उड़ान है या कोई मजबूरी या जवाबदेही आपको लिखने के लिए बाध्य करती है?

उत्तर : जबसे समझदार हुई, तभी से साहित्य या कहानी–उपन्यास पढ़ना मेरे दिन का हिस्सा रहे हैं। इनके किरदार मेरे इर्द–गिर्द मंडराते रहे हैं। ये किरदार कभी रोमांचित करते तो कभी दुखी भी। उन्हीं से समाज के भीतर तक झांक लेने का नजरिया मुझे मिला है। कथा लेखन की बात करूं तो मेरे समाज के जो दर्द मैंने औरतों की जिंदगी में झांककर महसूस किए, वहीं से इन्हें कागज पर उतारने की जरूरत भी महसूस हुई।

मुझे लेखन क्षेत्र में लाने का श्रेय मेरे आसपास जी रहे उन किरदारों को जाता है, जिनकी घुटन मुझ पर हावी रही। मुझे लगा कि यह घुटन तभी खत्म होगी, जब इन किरदारों की बातों को मैं दुनिया के सामने रखूंगी और इनके साथ शायद कोई न्याय कर पाऊंगी। यह मेरा मुक्ति संग्राम ही है। मेरे उपन्यास में भी औरत अपनी मुक्ति की राह खोजती और अपने रहनुमाओं के रहम से छटपटाती मिलेगी।

प्रश्न : आपका लेखन किसी उद्देश्य के लिए है यह अच्छी बात है। लेकिन इससे क्या आप किसी तरह का बंधन महसूस नहीं करतीं?

उत्तर : जो लिखा है खुलकर ही लिखा है। खुलकर लिखने का अर्थ मेरे लिए सिर्फ विरोध करने से नहीं है, बल्कि एक बेहतर तर्क के साथ समस्याओं को सुलझाने से है। आगे भी ऐसे ही लिखती रहूँगी। अपने इस लेखन से समाज को कुछ अच्छा दे पाऊँ या इसमें रत्ती भर भी बदलाव कर सकूं तो जीवन का उद्देश्य पूरा समझूँगी।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर के सदस्य बैंकों के संपर्क विवरण

क्र	सदस्य बैंक का नाम एवं पता	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रभारी
1	बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, 13, एयरपोर्ट प्लाजा, दुर्गापुरा, टोंक रोड, जयपुर	श्री महेन्द्र एस महनोत, अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक दूरभाष : 0141-2727101	श्रीमती प्रीति राउत, वरिष्ठ प्रबंधक दूरभाष: 0141-2727130 मो. 9331747197
2	बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, 13, एयरपोर्ट प्लाजा, दुर्गापुरा, टोंक रोड, जयपुर	श्री एस.के. बंसल, उप महाप्रबंधक, दूरभाष: 0141-2727150 मो. 9414068400	श्री जयपाल सिंह शेखावत, प्रबंधक (राजभाषा) दूरभाष : 0141-2727191, मो. 9950393161
3	बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, स्टार हाऊस, बी-4,सेक्टर 2, जवाहर नगर, जयपुर	श्री वैभव आनंद, अंचल प्रमुख दूरभाष: 9672995824	श्री भागेश कलोरिया, प्रबंधक दूरभाष: 0141-2658030, मो. 9724691351
4	बैंक ऑफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय, फोर्च्यून हाईट्स बिल्डिंग, छठा तल, अहिंसा सर्किल, सी-स्कीम, जयपुर	श्री देवेंद्र कुमार महाजन, अंचल प्रबंधक, दूरभाष: 9772847929	श्रीमती अन्नु शर्मा, प्रबंधक, दूरभाष: 9650137812
5	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, 1-ऑर्बिट मॉल, सिविल लाइंस मेट्रो स्टेशन के पास, अजमेर रोड, जयपुर-302006	श्री जय प्रकाश, कार्यपालक, दूरभाष: 0141-2222944, मो.: 9829007373	श्री ललित कुमार जांगिड़, प्रबंधक, दूरभाष:0141-2224907, मो.: 8003200896,7755927955
6	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आनंद भवन, प्रथम तल, संसार चंद्र रोड, जयपुर	श्री बी पी महापात्र, अंचल प्रमुख एवं श्री कुशल पाल, क्षेत्रीय प्रमुख, दूरभाष-9983664401	श्री पी. ए. गौड़, प्रबंधक, दूरभाष : 9828156287
7	आईडीबीआई, क्षेत्रीय कार्यालय, शोरूम नं. 2 व 3, सन्नी पैराडाईज, कमल एण्ड कंपनी के पास, टोंक रोड, जयपुर	श्री अंकुर दुबे, महाप्रबंधक	दूरभाष : 0141-4133200/1/2
8	इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, जेटीएम, एसएफ 50, जगतपुरा फ्लाईओवर के पास, मॉडल टाउन, मालवीय नगर, जयपुर	श्री पंकज त्रिपाठी, मण्डल प्रमुख, दूरभाष: 0141-2752216, मो. 7073452501	श्रीमती विमला मीना, वरिष्ठ प्रबंधक, मो. 9662342598
9	इंडियन ओवरसीज बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय एसबी-57, प्रथम तल, रिद्धि टॉवर, बापू नगर, टोंक रोड, जयपुर	श्री राकेश शर्मा, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, दूरभाष: 0141-4032708, मो. 9000151070	श्रीमती पदमा चाँदवानी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), दूरभाष 0141-4032940, मो. 9098214614
10	नाबार्ड, राष्ट्रीय कृषि विकास बैंक, 3, नेहरू प्लेस, लाल कोठी, टोंक रोड, जयपुर	श्री जयदीप श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक, दूरभाष: 9898194215	सुश्री संध्या चौधरी, सहायक महाप्रबंधक, मो. 7042828528
11	पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, 2 नेहरू प्लेस, टोंक रोड, जयपुर	आर के अरोड़ा, उप महाप्रबंधक, दूरभाष: 2743349	सुश्री पुर्णिका शर्मा, प्रबंधक, दूरभाष: 0141-2747048, मो. 8800350205
12	पंजाब एंड सिंध बैंक,आंचलिक कार्यालय, 30-31 मोहन टॉवर, प्रिंस रोड, विद्युत नगर, अजमेर रोड, जयपुर	श्री अशनी कुमार, सहायक महाप्रबंधक, दूरभाष: 0141-2358628	श्री महेंद्र कुमार मीणा, राजभाषा अधिकारी, दूरभाष:7055633555, मो. 9414333332
13	भारतीय रिज़र्व बैंक, रामबाग सर्किल, जयपुर	श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक दूरभाष : 0141-2577961	श्री बलराम सिंह पाल, सहायक महाप्रबंधक दूरभाष: 0141-2577952 मो. 9415403519
14	सिडबी, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, भूतल, ड्रीमएक्स प्लाजा, सहकार मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर - 302015	श्री बलबीर सिंह, महाप्रबंधक, दूरभाष: 0141-2744002, मो.: 8511104774	श्री वेद मखीजा, प्रबंधक, दूरभाष: 0141-2743004 मो. 8764064618
15	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, ए-5, नेहरू प्लेस, टोंक रोड, जयपुर	श्रीमती सरोज मिश्रा, मुख्य प्रबंधक, दूरभाष: 27445253	श्री नीरज शर्मा, प्रबंधक, मो. 8527600366
16	यूको बैंक, अंचल कार्यालय, आर्केड इंटरनेशनल, ऑरबिट मॉल, अजमेर रोड, जयपुर	श्री प्रदीप कुमार जैन, उप महाप्रबंधक, दूरभाष : 0141-2225617	डॉ सुधीर कुमार साहु, मुख्य प्रबंधक, मो. 9748006526
17	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, किसान भवन, लाल कोठी, टोंक रोड, जयपुर	श्री ओम प्रकाश करवा, कार्यपालक, दूरभाष: 0141-2744670	श्रीमती सोनिया चौधरी, सहायक प्रबन्धक, दूरभाष : 9560622690

जयपुर नराकास की 69वीं छमाही समीक्षा बैठक के कुछ दृश्य

नराकास जयपुर के सदस्य बैंक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

केनरा बैंक Canara Bank
सिंडिकेट Syndicate

बैंक ऑफ़ इंडिया
Bank of India

बैंक ऑफ महाराष्ट्र
Bank of Maharashtra
भारत सरकार का उद्यम
एक परिवार एक बैंक

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
Indian Overseas Bank
आपकी प्रगति का सच्चा साथी
Good people to grow with

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

पंजाब नैशनल बैंक
punjab national bank
Oriental Bank of Commerce
United Bank of India

राष्ट्रीय कृषि और
ग्रामीण विकास बैंक
नाबार्ड

IDBI BANK

भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA

सिडबी

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank

यूनियन बैंक Union Bank of India
आन्ध्रा Andhra

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank of India
हर भारतीय का बैंक
THE BANKER TO EVERY INDIAN

प्रकाशन तिथि : 31.08.2020

मुद्रक : प्रिन्ट-ओ-प्रिन्ट • फोन : 9414043784